सत्यम् परम् धीमहि.

हिन्दनी केळवणी.

लेखक तथा प्रकाशक,

वजेशंकर कानजी.

कोटडा-सांगानी

काठियावाड

सन १९१४ संवत १९७१

नमः शिवाय

अर्पण

--:०:-

सौजन्य सुधासागर श्रीयुत माण [illegible] रजी

[illegible] याव

महाशय !

सवित्रीरत्नानामनिरवधिवि [illegible] इ

इयं वीरान्धीरान्कतिकतिन

बहुरत्ना वसुन्धरा। विश्वमां जा

रत्नो हशे परन्तु प्रकाश अने कोमळतानो, बु

दुर्लभ छे. आ हृदयशून्य जड समयमां हि

तत्त्वनुं दर्शन कवचितज थायछे. पश्चिमनी

सर्वत्र हृदयचक्षुने बन्ध करती जणाय छे.

अत्यारे प्रायशः अभण वर्गमांज दे

आवा अभावमां, मृगजलथी

भाग्यवशात् मळतां, अ

तिज आकर्षे

गतिक श्लाघार्थ, के सहेतु खुशामतथी नामांकित म हत्तानां स्तोत्रो न गातां हृदय ज्यां नमेछे, मान ज्यां स्वयमेव वहेछे त्यां हृदयना स्वाभाविक उमळक —वाि . वहवा दउंछुं. महानुभाव! आपनां गौरवने बहिर् बुद्धि वृत्ति, मंगल ो सम्प्रदाय जाणे के न जाणे— आपनां गू. जोई शके के न जोइ शके परन्तु जे हृदय आपने नुभवथी लेशपण जाणे छे ते मानथी भक्तिथी द्र हिज रहे. स्वार्थ जे शब्दो खुशामतना मुखथी व स्वयमेव हृदयना आवेशथी नीकळी त्य ; नामांकित महत्तानी सहाय मागतो हि ाधवानो म्हारो हेतु छे. म्हाराथी अजाण्यां ां वां विमळ निरभिमान महान् हृदयो होय, य दृष्टिने उत्तेजीत करती होय, अमृत अने यां ज्यां हृदय अने दृष्टिने शान्तिअमृतथी यां म्हारा शब्दो म्हारो लेखप्रवाह वहो. तेमनी —म्हारुं बळ छे. प्रसिद्ध के अज्ञातना भेद ि विज्ञप्तिनुं पात्र छे. तेथी आप अने बीजां न्द दिव्य हृदयोने आ म्हारी अव्यव- ग प्रयत्नने हुं योग्य मार्गे प्रेरुं जीवनो जे संस्कार जोवानी,

त्यज छे. एवां महात्म्यने सम्बोधवामां पण हुं मने भाग्यशाली मानुं छुं.

व्यक्तिओना अनुभवथी जातिनुं भान थाय छे. असम्भवित जेवी जणाती हृदयोन्नतिनी जातिने सम्बोधतां ते दिव्यतानी सूचक व्यक्ति तरफ म्हारी दृष्टि सहज वळे छे. अने आपने सम्बोधवामां हुं मानव हृदय गौरवना प्रतिनिधि एकमूर्त व्यक्त स्वरूपने सम्बोधुं छुं. म्हारा हृदय उपर वधारे प्र... भोगवनार बीजां हृदयो हतां अने छे; परन्तु जे वर्गने उद्देशीने आ लेख लखाय छे ते वर्गमां मने आप जेटलो बीजा कोईनो अनुभव नथी. बीजाओ अल्प छे एवी मान्यताथी नहि परन्तु बीजाओनी महत्ता के अल्पता म्हाराथी अज्ञात छे तेथी—अज्ञात विषे कंई पण कहेवुं अनुचित होवाथी—ज्ञात महहृदयताने सम्बोधी हुं सन्तोष मानुं छुं. ए सम्बोधन—ए अर्पण—व्यक्तिना व्यक्तित्वने नहि परन्तु व्यक्तिना तत्वथी प्रमितिनो ... विषय थती सहृदय जातिने छे. व्यतिरेक नहि परन्तु स्व... धर्मज हृदयमां स्नेह उत्पन्न करे छे. ए स्नेह—ए ... स्वीकार करवा मानव-हृदयनी विभूति ... इच्छुं छुं.

कोटडा—सांगाणी ...

काठीया...

...

॥ ॐ ॥

सत्यं परं धीमहि ।

हिरण्मयेनपात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखं ।
तत्त्वंपूषन् अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥ १ ॥

हिन्दनी केळवणी.

केळवणीनां हृदय मन्दिरमां प्रवेश करवा पहेलां तेना द्वारमांज पडेला एक महान् निरोधक पदार्थने आपणे लक्षमां लइए.

विद्या ए पदनुं अने वाक्यनुं नहि परन्तु पदार्थनुं अने विचारनुं ज्ञान छे. ए ज्ञान प्राप्त करवा माटे टुंकामांटुंको अने सरळमां सरळ होय तेज मार्ग ग्राह्य छे. साध्यने सिध्ध करवामां शक्ति अने समयनो व्यय जेम ओछो थाय तेम करवुं
विद्याना—ज्ञानना प्रदेशमां आ सूत्रनी आवश्यकताना
विचारकोना लक्ष बहार छे एम तो हुं
एटलुं तो मने लागे छे के ए विचा
महत्तानुं खरुं स्वरूप सम
महत्ताने घटतो

विदेशीय विद्वानोथी पण वधारे विद्वत्ताभर्या विचारो दर्शावे, एथी कंइ देशनी उन्नति थइ शके नहि. तेओनी पंडितता अने सामान्य वर्गनुं अज्ञान, तेमनी वच्चे एवो मोटो अन्तर रहे छे के तेओ कोइपण रीते ते समाजना अंगरूप थइ शकता नथी. सामान्य वर्ग तेमनी महत्ता समजी, के अनुसरी शकतो नथी अने ज्यांसुधी ते महामन्यो पोतानुं ज्ञान पोताना सामाजिक बन्धुओने आपी न शके त्यां सुधी देशने माटे तो तेओ मात्र विदेशीय स्तुतिनां व्यर्थ पुतळांथी कंइ वधारे नथी. एवा विद्वानोने स्वदेशी केम कहेवा ते समजी शकातुं नथी. सत्य छे के गोख्शीथी आगल वधेलो एक नहानो पोपटवर्ग बंधबुद्धिए अने छूटी जीभे तेओनां अतिशय वखाणथी पोकळ हवाने गजावी मूके छे,—गाडरीया प्रवाहनी तालीयो तेमने अमर कीर्तिनो काल्पनिक साक्षात्कार करावे छे. परंतु अहो! कीर्ति ए शुं छे? निःस्पृहोनां पण हृदयोने सस्पृह विह्वळ बनाव-नार—हृदयनां आनंद तन्तुओने ध्रुजावी, हलमलावी कोइ मस्त ध्वनि जगावनार कीर्ति ए शुं छे? मनुष्यो पशुता धारण खेंचे, हृदयनुं स्थान देखावने, अने गुणज्ञतानुं स्थान ना असंख्य टपाकाओथी वक्ताना मुखनी पडाइ गयेलां बीबांओमांथी मानना वर्षावे—ए मान—कीर्तिनुं महत्ता ए हृदयनुं

आपणा तरफ ममत्वथी—उपकार वृत्तिथी—मानदृष्टिथी स्नेहनी स्वयम्भू ऊर्मिओ शुभ भावनाओ वहेवरावे छे—आपणा उदयमां पोतानी उन्नति, अने विजयमां पोतानुं गौरव गणे छे—आपणने पोताना लेखे छे—ए विचार शुं आपणा जीवनने धन्य धन्य—कृतकृत्य—आप्त काम करवा—मनाववा बस नथी? आपणुं हृदय जे हृदयो माटे निरन्तर करुण भावनाओथी वह्या करे छे ते हृदयो, आपणा स्नेहने जोइ, अनुभवी अने प्रतिफलित करी शके ए शुं ओछुं आनंदजनक छे? जडबुद्धिने आंजी नाखनार प्रकाश, कीर्ति नथी. पाषाणोने पण, हृदयस्पर्शी, अमृतमय, शीतल, शान्त, किरणोथी द्रवित करी, विमल रसनां अखंड झरणां वहेवरावनार कान्तिमय आत्मा कंइक जुदीज वस्तु छे. विमल कीर्तिकांक्षा ए विशाल स्नेह पिपासा छे. एक हृदयनो पण खरो स्नेह, समग्र जन समाजनां पोकळ प्रशंसा गर्जनथी असंख्यगणो किमती छे. शुं शून्योनी अनन्त परम्परानी कंइ पण सार्थकता होइ शके छे? शुं शून्यने संख्यानी अनन्तताए गुणवाथी एकनो अनन्तमो अंश पण प्राप्त थइ शके छे? इतिहासनी दृष्टिने विफळ करता कोइ अगाध गूढ भूतकाळथी, अखंड अस्तित्व भोगवती—अनेक रूपान्तरो पामवा छतां, मानव हृदयपट परथी नहि भुंसाएली दन्तकथाओ प्रजा हृदयना प्रभुओनां अदृश्य स्नेह साम्राज्योनी अस्फुट विजय घोषणाओ छे. संपूर्णश्रद्धेय एवी दन्तकथाना गूढ बीजरूप थवामां जे महात्म्य छे ते इतिहासनां व्यक्तमान्य पृष्ठोपर विहृदय सुवर्ण अंकोथी अंकित थवामां नथी. जो समाजना हृदयपर अधिकार

प्राप्त करवो होय तो [illegible] अंतःकरणे तेनी सेवा करो; एमांना क्लिष्ट अने मूढ हृदयोने शान्ति ज्ञान अने आनन्दनां तत्वोथी संतुष्ट करो. गौरवप्रिय व्यक्तिओ! समजो के सेवा एज प्रभुता छे. यज्ञ एज आर्योनो धर्म छे, एज तेमना ऐश्वर्यनुं अमोघ दिव्य साधन छे. आपणी केळवणी, आपणा नेताओ, तेमना विदेशीय उपदेशो, ए सर्वे देशनी शुं सेवा करे छे? कया दोषने दूर करे छे? कया उग्रदाहने शमावे छे? कइ प्राणशोषक तृषाने शान्त करे छे? आ प्रश्न केळवणीने अंगे छे. हिन्दमां जे कंइ जागृति प्रसरेली जोवामां आवे छे तेमां आपणा नेताओए अति महत्व भर्युं अने प्रशंसनीय काम कर्युं छे; परन्तु शिक्षक अने शिष्य उभयना केटला भोगे ए परिणाम आव्युं छे ए विचारवा जेवुं छे. गोक्षीज्ञानथी दूर रहेल असंख्य शुद्र अंतःकरणो अने तीव्र गम्भीर बुद्धिओ पोताना महत्वनो लाभ देवा के लेवा सर्वदा असमर्थज रहे छे. नैसर्गीक बुद्धिनो एक स्वाभाविक नियम छे के, ते विचारहीन महेनतथी दूर भागे छे अने तेथी अलबत जोके सामाजीक ज्ञान दूध माफक पाइ देवाय एवुं तो न थइ शके तोपण तेमांनी व्यर्थ कटुता अने हानीकर कठिनताने जेम बने तेम दूर करवाथी घणी नकामी जती शक्ति उपयोगमां लइ शकाय एम लागे छे.

इपेमिनोनडासनी महत्ताके मातृभूमिभक्ति ग्रीकसनो स्थायी उदय साधवा असमर्थ नीवडी. ग्रीकन समाजनुं नेताना आधारे टकी रहेलुं गौरव नेता जतां धूळमां मळी गयुं. ग्रेशीआनो आर-

नोल्ड रोमन प्रजाना [illegible] पोतानी साथे लई गयो. सत्व-हीन अस्थिर रोमन समाजनुं चित्त पोताने हांकनार जतां मार्ग भूली आडुं अवळुं रखडवा मांडयुं. एथेन्सनो अने रोमनो उदय तेना सामान्य प्रजावर्गनी मानसिक उन्नतिनुं मात्र प्रतिबिम्बज हतुं. मोजशोखथी–गर्वथी–वर्तमान दुःखना अभावे उपजती निश्चिंतता अने निष्क्रीयताथी–सत्ताथी उपजती अन्याय्य अभिलाषाथी मलिन क्षुद्र अधम थयेलुं सामाजीक चित्तज, उदयना शिखरे [illegible] मगरुब प्रजाओनी शरम भरेली अने दयाजनक अधोगतिनुं कारण थाय छे. आखा समाजना ए अधोवहन–अधःपातमां बिन्दु व्यक्तिनी उन्नत दृष्टि कंइ साधी शक्ती नथी. रोमन महाराज्यना ध्वंसमां महान् व्यक्तिओना महान् प्रयत्नोनी निष्फळता, एज सिद्धान्तने व्यक्त करे छे. व्याक्तिक कीर्ति नहि परन्तु सामाजीक गौरवज देशना गौरवनुं सूचक अने साधक छे. ए सामान्य चित्तने केळववुं, तेमां सहृदयता अने ज्ञान भरी तेने उत्साह अने शक्तिवाळुं करवुं ए प्रथम साध्य छे. एक व्यक्ति चित्तनी महत्ता नहि परन्तु अनेक चित्तोनी एकता अने ए एक समष्टि चित्तनी उन्नतिज प्रजानी खरी उन्नति छे. देश ए देशना नेताओ नहि परन्तु तेनो सामान्य जनसमाज छे. प्राणप्रतिष्ठाहीन पाषाणप्रतिमाने धरावेल मुकुटो जडताने झळकाववा छतां तेना तत्त्वने लेशपण जीवनकान्ति अर्पि शकता नथी. मुकुट ए महाराजने शिरे शोभे छे परन्तु गुलामना म[illegible]कपरना व्यर्थ मुकुट तेना अवनत म[illegible]कने साम्राज्य लक्ष्मीना उन्नत रस द्रवथी अभिषि[illegible]तो नथी. [illegible]कुटहीन महा-

राजा पोताना तत्त्वथी महाराजाज छे. मुकुटयुक्त गुलाम तेना तत्त्वथी गुलामज छे. अलंकरणोमां निसर्गने फेरववानुं सामर्थ्य नथी. हृदयना भोगे अलंकारनी उपासना ए मूर्खता छे. आ वात लक्षमां राखी आपणी केळवणीनी पद्धतिनुं निरीक्षण करतां जणाय छे के तेमां मोटामां मोटुं दूषण परभाषा द्वारा ज्ञाननुं वहन करवुं ते छे. स्वाभाविक नदीओना शान्त, विशाळ, उंडा प्रवाहो तरफ लक्ष न आपतां नहानां होडकां चलाववा माटे मोटे खर्चे, अथाग महेनते, कृत्रिम नहेरो बांधवी. ए आ जमानानी सुधरेली बुद्धिनी एक विशेषता छे. आपणी आ महेनत माटे वर्तमानमांतो आपणे गमे तेटली आपणी श्लाघा करीए परंतु भावि जमानाओमां तो आपणे हास्य अथवा दया शिवाय कशानी पात्रता धरावी शकशुं नहि. एक मनुष्यना हृदयमां होइ शके तेटली मारा हृदयमां खात्री छे के आनो खरो प्रत्युत्तर कांइ छेज नहि; छतां होठ साजा तो उत्तर झाझा ए वात खोटी नथी. अंग्रेजी ए राज्य भाषा छे; तेनुं ज्ञान आवश्यक छे; तेना विना चाली शकेज नहि; समग्र हिन्दमां एक भाषा नथी; अने अनेक जुदी जुदी भाषाओमां जुदे जुदे स्थळे केळवणी आपवी ए अति अगवडवाळुं छे, अने हिन्दनी एकतामां प्रान्तिक भेद उत्पन्न करनारुं छे, आ सर्व मात्र उत्तरोज छे. सत्यना शोधके पक्ष बांधीने विजय अने पराजयना विचारथी वाद करवानो नथी. सत्य जाणवा अथवा जणाववा अने सिद्ध सत्यने अमलमां मूकवा वाणिनो सहृदय निष्कपट सबळ प्रयोग करवानो छे. आपणी मूर्खता—अज्ञानता, बीजाओ जाणे, प्रकाशमां सिद्ध थाय, अने आपणे

स्वीकारवी पडे, ए शरम जेवुं लागे छे. परन्तु अपूर्ण मानव बुद्धिने सत्य शोधवानो एज मार्ग छे. मूर्ख रहेवा करतां अज्ञान कबुल करी नम्रताथी सत्य गृहण करी लेवुं ए इष्टतर छे. हिंमतथी कहेवुं, ए अमोघतानुं अभिमान नथी परन्तु हृदयनुं–मतनुं खरुं दम्भहीन व्यक्ती करण छे. आनन्दथी स्वीकारवुं ए पराजय अने शरम नथी, परन्तु निष्पक्षपात, विवेकशक्ति अने नैसर्गिक जिज्ञासा छे. लेखकना लेख सत्य तरीके निर्विवाद साम्राज्य भोगववा नहि, परन्तु प्रतिपक्ष साथे मळी, समुद्र मथन करी, अमर तत्व प्राप्त करवा माटेज छे. आ वात लक्षमां राखी–आ वातथी प्रेराइ हुं लखुं छुं अने ए वातने लक्षमां राखी लखाएल उत्तरनी अभिलाषा राखुंछुं. अंग्रेजी ए राज्यभाषा छे ए खरुं छे अने तेनुं ज्ञान आवश्यक छे ए अमुक वर्गने माटे खरुं छे; परन्तु ज्ञानना वाहक तरीके तेनो उपयोग सर्वने माटे आवश्यक छे अने तेना विना चाली शके तेवुं नथी एम माराथी मानी शकातुं नथी. राज्यभाषा तो शुं परन्तु सर्वे, ज्ञान अने रसथी भरपूर, भाषाओनो गम्भीर अभ्यास हिन्दने माटे आवश्यक छे, अने ए परभाषाओमांथी आपणा दुर्भिक्षथी मृतप्राय देशने सजीव राखवा घणुं अन्न अने जळ पण लाववानुं छे. आ सर्व खरुं छे; अने ए वातने लक्ष बहार जवा देवी ए घणुं हानीकर छे. परन्तु अन्न ए आत्मा नथी. आत्माना–चैतन्यना अनावश्यक भोगे खरीदेलुं अन्न त्रासजनक छे. आपणी भाषा–आपणी बुद्धि–आपणी जिज्ञासा सर्व दीर्घ समयनी गोक्षीथी जड मृतप्राय बनी जाय, आपणा जीवननुं बळ हणाई जाय, उत्साह भांगी

जाय, अति थाक अने महेनतथी चैतन्य लोथ थइ जाय, साध्यने सिद्ध करवानी शक्ति के वृत्तिनो अंशपण न रहे त्यारे आपणने साध्यनुं साधन मळे, ए साधन पंडितमन्योंने इष्ट हो, जिज्ञासुओने नकामुं छे. दरेक सारवत् भाषाना खास अभ्यास करनारा होय, अने तेओ हिन्दी देहमां विचारोनुं अवतरण करे एटलुंज बस छे. प्रमाणथी वधारे अपातुं ध्यान अन्य आवश्यक विषयोमांथी ओछुं थाय छे. आपणा ग्रेज्युएटोनो मोटो भाग निःसत्व निकळे छे तेनुं एज कारण छे, केमके सामान्यतः गोक्षिनो तेमां विजय छे, अने बुद्धिनी तेमां हाडमारी छे. शिक्षण पद्धतिमां बुद्धिने आकर्षवानी, संतोषवानी, अने उत्तेजित करवानी शक्ति होवी जोईए. परभाषानुं आवश्यक अध्ययन अने खास करीने परभाषानो [illegible] इजारो त्रासजनक छे. ज्ञानपिपासाने जलनुं कण पण आप्या पहेलां अनेक सुका पथराओ गळवा पडे छे, अने जळ ज्यां दृष्टि समक्ष आवे त्यां तो पथ्थरथी पुरायेल पेटमां एक बिन्दु माटे पण मार्ग नथी होतो. आपणो ग्रेज्युएट झळहळता अभिनन्दनने नहि परंतु दीन अनुकम्पाने पात्र छे. जे समये ते विजयपताका फरफरावतो उपाधि दुर्गना उच्च शिखर पर दृष्टिगोचर थाय छे अने पोतानी उच्चस्थित दृष्टिथी समग्र परिस्थितिपर प्रभुता प्रसरावतो लागे छे, ते समये तेनुं समग्र बळ हणाई गयुं होय छे, रुधिरहीन देह अशक्त खालीथी कम्पतो होय छे, ध्रुजता पग, शरीरने, डगमगतुं क्षणभंगुर शंकामय अवलम्बन मात्र आपवा अति दुःखे प्रयत्न करता होय छे, श्वास-नौकानुं लंगर उंडां उदधितलमां क्यांय स्पर्श करतुं नथी, स्थानभ्रष्ट

धरीवाळुं यन्त्रचक्र आखा यन्त्रसमूहना व्यवहारने विनाशक आंचकाओ आपे छे, बाह्य न्द्रियोनी प्रा कशक्ति अने आन्तर वृत्तिओनी धारणशक्ति उडी गई होय छे, पराधीन शाम्भवी शारीरिक भानने ध्वंस करती होय छे, कोई प्रबल अन्धकार जी[illegible] मूढ-ज्ञानहीन करतो होय छे. शुं आ तेनो विजय? शुं आ तेनी महत्ता? उन्नत साध्य माटेना स्तुत्य प्रयत्ननुं आवुं परिणाम करुण छतां गौरवभर्युं लेखाय. परन्तु ज्यां स्वभाषाना—ज्ञानना—जिज्ञासाना--हिन्दनी जीवनशक्तिना भोगे आवुं व्यर्थ कीर्ति के दास्य-साध्य प्रवृत्तिनुं प्रेरक होय त्यां आर्द्रतम हृदयो मात्र दयाज अनुभवी शके छे.

समग्र हिन्दमां एक भाषा नथी ए खरुं छे तेमज विचारना वहनमाटे एकज भाषा जोइए एवुं कंई नथी. परन्तु भाषाभेदथी प्रजाभेद थवा सम्भव छे ए खरुं छे; अने ए वातपण हिन्दनेताओना लक्ष बहार नहि तो छेवट योग्य प्रयत्न बहार तो छेज. शुं तेओ एम माने छे के भाषाऐक्य प्रयत्नसाध्य नथी? अथवा शुं तेमने मन ते ऐक्य अनावश्यक छे? गमे ते हो, परन्तु उन्नति माटे मथती प्रजाना सहृदय नेताओमां जे तीव्र पारदर्शी अवलोकन-शक्ति, अप्रतिहत उत्साह, अखंड भगीरथ प्रयत्न होवां जोइए ते हजु बहु थोडाओमां छे. कीर्तिउपासको घणा छे; परन्तु हजु तेओनुं द्रावक वाक्चातुर्य नाटकीय केळवणीने आभारी छे. सहानुभूति-विह्वलता-मार्गनी आतुर शोध-प्रगतिमाटे तरफडीआं ए सर्व क्यां

छे ! हिन्दनां विस्तृत सत्वहीन अंगोमां जे तीव्र दुःख प्रसरी रह्युं छे तेने समजनार-अनुभवनार-तेथी आकुल थनार-दोष हर संजीवक सत्वने प्रयत्नथी प्रेरनार आत्मा क्यां छे ? **अतिस्नेहः खलु कार्यदर्शी** ए कहेनार कालिदास ! अमारी कार्यदृष्टिनो अभाव अमारा स्नेहने शंकनीय बनावे छे.

एतत्तु दुर्लभमिदं ननु लोकनिन्द्यम्
यत्नैरलं विपुलविघ्नमयेप्सिताप्तिः ।
इत्थं विचारयति तुच्छमना नकामी
कामः स एव विधिनाऽपि न रुध्यते यः ॥

तो शुं आपणामां हजु ए तीव्र हृदयदाह ए दाहक उन्नतिअभिलाष नथी उद्भव्यो ? शुं आपणां वाक्यो ए बळतां उकळतां हृदयनी वराळ-उभराओ नथी ? हुं नथी जाणतो. परन्तु एटलुं तो खरुंज के आपणा बळमां निर्बळता अने उत्साहमां निरुत्साह देखाय छे. परंतु तेथी निराश थवानुं नथी. तीव्र आकांक्षा के महान् फळ एक क्षणनुं परिणाम नथी. ए सर्व, भक्तोना प्रबल प्रयत्ननी अपेक्षा करे छे. समय अने प्रयत्नथी कंइपण असाध्य नथी. पूर्णचन्द्रनी उन्नति साथे आ महासागरनी उन्नति पण अप्रतिहत स्वयंसिद्ध छे, ए विचार सर्व प्रयत्न करनाराओनां आशा अने उत्साहमां नवुं जीवन भरवा समर्थ छे. भाषानुं ऐक्य प्रजाऐक्यमां आवश्यक छे अने ते, प्रयत्नो अविषय नथी. पूर्ण भाषा-ऐक्य विषे अहिं विशेष न कहेतां केळवणीमां भाषा ऐक्य अंग्रेजी-

सिवाय साध्य छे के केम, अने साध्य होय तो तेमां सरलता छे के केम एज जोवानुं छे. हिन्द उपर अंग्रेजी के अन्य कोइ पण भाषा जाणनार करतां हिन्दी भाषा जाणनार-समजनार घणां वधारे छे. जुदा जुदा प्रान्तोनी सामान्यवर्गनी व्यक्तिओ, इतर प्रान्तोमां व्यवहार माटे तेनो उपयोग करे छे. विदेशीओ पण हिन्दमां ते भाषाना उपयोगनी व्यापकता अने सुगमता जाणे छे. अभ्यास विना विनाश्रमे ए परिचित छे, तेना उपर घणो थोडो श्रम लेवाथी महान् परिणाम लावी शकाय तेम छे. तेनी मधुरता, तेनुं गाम्भीर्य, तेनुं सामर्थ्य, तेनी भव्यता, सर्व अप्रतीम छे. अंग्रेजी जेटली ते खेडाएली नथी, परन्तु भव्य संगीतमय अद्भुत बळभरी ए समर्थ भाषा तेनां बाळकोनी निःसत्वताने लीधेज दुनीयानी सर्वोत्तम भाषा नथी. संस्कृत अने पर्शयननां अलौकिक तत्वोनां मिश्रणरुप ए भाषामां, एक उपयोग सिवाय शुं नथी ? जो हिन्द हिन्दने एक भाषामां केळववा इच्छे तो तेनुं साधन भव्य हिन्दीज छे. म्हारा कहेवानुं तात्पर्य एवुं नथी के आखा हिन्दमां सर्व स्थळे हिन्दीमांज ज्ञान आपवुं परन्तु जो आखा हिन्दमां एक भाषामांज ज्ञान आपवुं एम कोइनी मान्यता होय अने एम थवाथी भाषा ऐक्यनी सिद्धि थशे एम कोइ धारतुं होय तो अंग्रेजी करतां हिन्दी, ते व्यापक हिन्दी, ज्ञानवाहिनी थवा केटली वधारे पात्रता धरावे छे ते बताववानो मारो उद्देश छे. हुं तो एमज मानुं छुं के पारणांनी भाषा करतां ज्ञानवाहन माटे बीजी कोइ पण भाषा वधारे योग्य नथी. जीवन-भाषा अने विद्याभाषानो भेद ए मूर्ख पंडिताई छे.

प्रान्तो पोतानी वर्तमान मातृभाषानो त्याग करी विदेशी के स्वदेशी कोई एक भाषा एकदम स्वीकारे ए असम्भवित जेवुं छे. भाषा ऐक्य ए एक कलमना लीसोटाथी साधी शकातुं नथी. खरो मार्ग तो एज छे के दूरस्थित झरणोना प्रवाहोने एक दिशामां एक मध्यबिन्दु तरफ वाळवा अने एम प्रगतिथी—ते सर्वना सम्मेलनथी—संगमथी एक महान् नद प्रवाह उपजाववो. बंगालीओ, महाराष्ट्रीओ, गुर्जरो के बीजा कोइ प्रान्तजनो पोतानी बालभाषानो सदा माटे त्याग करी हिन्दीनो के अंग्रेजीनो आश्रय ले ते अशक्य जेवुं अने अनावश्यक छे. भिन्न भिन्न भाषाओने वारंवार परिचयमां लावी एक बीजी उपर असर उपजाववाथी धीमे धीमे साहचर्यथी समानता अने स्नेह उत्पन्न थाय छे, अने धीमे धीमे नजीक नजीक आकर्षातां ए हृदयोनी गाढतर मैत्रीलग्नमां अन्तर् बहिर् सम्पूर्ण ऐक्यमां परिणमे छे. भाषा ऐक्यनो आज मार्ग श्रेष्ठ छे. दरेक प्रान्त केळवणीनां साधन तरीके पोतानी मातृभाषानोज उपयोग करे परन्तु साथे साथे बीजी भाषातरीके हिन्दी अने संस्कृतनुं शिक्षण आपे एज इष्ट छे. प्रान्तिक व्यवहार माटे, समग्र हिन्दना सम्मेलन माटे, हिन्दीनो अभ्यास आवश्यक छे अने विविध वाणिओमां समानता उत्पन्न करवा माटे अने सर्वमां माधुर्य, गाम्भीर्य, सामर्थ्य अंशांशव्यक्तता, मितशब्दोमां विचारबाहुल्यने स्पष्ट व्यक्त करवानी अद्भुत शक्ति ए सर्वनो न्यास करवा माटे संस्कृतनो अभ्यास उपयोगनो छे.

भाषा ऐक्यनु साधन विध्वंसथी अने नवा आरम्भथी सम्भवतुं नथी. प्रगतिनो आत्मा विकास छे. धारण करेलुं ते स्वाभाविक नथी. श्रवण, शब्द, व्यवहार आदिना प्रथम प्रसंग साथे जन्म साथेज प्राप्त थएल-हृदयमां रसाइ गएल सहज वाणिज स्वाभाविक जेवी बनी विचार वहननुं सरलतम अने स्पष्टतम साधन बने छे. जो ज्ञानज देवानी के लेवानी इच्छा होय – जो विचारो अने लागणीओनुं वहनज वाग्व्यवहारनो मूळ उद्देश होय तो तो ए वाणिनोज आश्रय स्वाभाविक लागे छे अने ए स्वाभाविकतानो विरोध ए जिज्ञासानो अभाव, पंडित मान्यता, अने शक्तिनो मूर्खतामां विध्वंसज सूचवे छे. कुदरत सामे युद्ध करवामां पराभव अने उपहासज परिणमे छे. केळवणीमाटे जन्म भाषाज उचित छे. दृष्टिने पराणे खेंचनार आ वातनो अनादर शुं सूचवे छे ए हुं कहेवा नथी इच्छतो. शुं इंग्लांड लेटीनमां शीखे छे ? शुं जर्मनीनी ज्ञान वाहिनी ग्रीक छे ? शुं जापानना विद्यालयो संस्कृतमां उपदेश करे छे ? आ स्थिति शुं अगाध भूत के विशाळ वर्तमानमां हिन्द सिवाय कोइ स्थळे दृष्टि गोचर थाय छे ? अनुमान शुं तेनी योग्यता कल्पी शके छे ? **भवतु** ! जे हो ते हो. मने अहिं महान् दोष जणाय छे अने तेनुं निवारण आवश्यक लागे छे; ते थशेज. ज्यां सुधी हिन्दमांथी हृदय नष्ट नथी थयुं, ज्यां सुधी भूतदया अने आत्मैक्यना सिद्धान्तो, सहानुभूतिभर्यां कोमळ अन्तःकरणोना मर्मतन्तुओने धुजावी हलमलावी मुकी, कोइ भेदक करुणध्वनिथी हृदयाकाशने पूरीदे छे-ज्यां सुधी हिन्दमां हिन्दनुं बाळक कहेवावाने योग्य एक पण

२

हृदय छे त्यां सुधी हिन्दनी आन्तर उन्नतिनो निरोध करवा कोइपण बळ समर्थ नथी. निर्दम्भ हृदयनो विजय अप्रतिहत छे. विघ्न-दुर्गोने भेदवा सत्य संकल्पो सर्वदा समर्थज छे. अभिमान उपर प्रबल-तरतानो अंकुश छे. तीव्र हृदयकाम अंकुशीत थवु समजतोज नथी. भिन्न भिन्न आचार्योनां अनुगमनथी, जूदां जूदां आकर्षणथी, विविध भाषाना व्यतिरेकीपणाथी लांबा वखतथी बंधाई गएलां-पोताने संपूर्ण प्रजारूप मानतां टुंका टुंका मंडळोथी हिन्दी प्रजानां अंगे अंग अत्यारे जूदे जूदां थई गयां छे. ए सर्व अंगोने सांधी तेमां एक प्रजाना जीवन अने प्रगतिमां आवश्यक ऐक्यनो आत्मा प्रकटाववो ए सर्व स्वदेश सेवकोनो अभिलाष अने धर्म छे. कोइपण प्रजानी उन्नति के अवनतिनो विचार करती वखते तेनी स्थितिनो तेनां दृष्य साधनोनो--तेमां दृष्टिगोचर थतां बळनो बहु विचार करवानो नथी. समय चक्रनी कोइ अप्रतिहत आवश्यकताने अंगेज केम जाणे तेमनी उदय माटे निर्माण थयेली प्रजाना देहमां चैतन्य आत्मानो एक अति सूक्ष्म तनखो प्रकटे छे अने ते चित्तमां उत्साह--अंगमां शक्ति--प्रयत्नमां अप्रतिहत खंत भरे छे. अंगमां शक्ति प्रयत्नमां अप्रतिहत खंत भरे छे. प्रबल विघ्नाघातमां--शून्यसम निराशामां अजीत धैर्य अने निश्चित आशानी मधुरी प्रोत्साहक श्रमहर जीवनप्रद हुंफ अर्पे छे. बालकनी शक्ति वृद्ध जेटली होती नथी परन्तु वृद्धनुं जीवन तरंगना उन्नततम शृंगथी उतरतुं होय छे, अने बाळकनुं जीवन ते तरंगनी पादांगुलिथी निश्चित उन्नतिनो आवश्यक आरम्भ करतुं होय छे. बालक

हिन्दनो उद्धार अवश्य निर्माण थई चुकयो छे. विश्वनुं कोई पण बळ तेनो निरोध करवा समर्थ नथी. महासागरनी भरती माफक हिन्दनी प्रगति धीमी पण निश्चित अनिवार्य छे. हिन्द दिवाकरना उदयनो अवरोध असम्भवित छे. आ ख्याल शुं आपणने उत्साह आनंद निडरता अने पवित्र अभिमानथी मस्त नथी बनावतो? प्रजा जीवनमां ए मस्ती एज गौरव छे एज चेतन छे एज सर्वस्व छे. आर्थिक उन्नतिना गगनचुम्बी शिखरे पहोचेली प्रजा पण ए मस्तीना अभावे प्रजापणुं गुमावी बेसे छे अने एम अवलम्बक बळना अभावे लथडी पडी गहन तळाटीना भेदक वज्रमय पथ्थरोमां अथडाती, गोथां खाती खाती, झांखी झांखी थती अन्ते अगाध पातालनी विशाल ऊंडी गुहाओमां अन्धकारनां गाढां पडोमां अदृश्य थई जाय छे. हिन्दमां जे उच्चाभिलाषानो आत्मा प्रकट्यो छे तेने प्रभावे हिन्दनां सर्व विघ्नोनो ध्वंस अने सर्व साध्योनी सिद्धि निर्मितज छे. तेनो अनिरुद्ध आरम्भ थई चुक्यो छे. प्रारब्ध उन्नति थशेज. सर्व बाधक सत्वोनो पराभव करी थशेज. परन्तु थशेज एम मानी बेसी रहेवुं ए कामनो अभाव के मन्दता सूचवे छे. सिद्धि के असिद्धिनो सम्भव के निश्चिततानो विचार ए आकांक्षामां सम्भवित नथी. तृषादाह जलनी दुर्लभता के अलभ्यताथी शान्त थतो नथी. तृषार्तनां तरफडीआं भावीनी निश्चितताथी शमी जतां नथी. प्रयत्न अने पछाडा तीव्र इच्छा साथे सर्वदा जोडाएल ज छे. ज्यां साध्य–काम-अर्थ ए धर्म छे त्यां

आ व्याकुलता ए पुण्यमय उपासना छे—भक्ति छे—इष्ट सिद्धिनी पात्रता छे.

ज्ञानवहन-विचारवहन कंई शाळामांज सम्पूर्ण थतुं नथी. आपणा विद्वान् उपदेशको, प्रसिद्ध वक्ताओ पोतानुं पांडित्य इंग्लिशमांज झळकावे छे. शुं तेमना हृदयमां हिन्दी माटे स्थान नथी? शुं तेओनां वचनो विदेशीओ अने ग्रेज्युएटो माटेज छे? शुं बुद्धि अने शक्ति विदेशी भाषानेज वरी छे? शुं तेनुं अन्यत्र दर्शन ए व्यभिचार छे? शुं सामान्य प्रजावर्गने अने तेमनी भाषाने अडकतां तेओ अभडाय छे? शुं ज्ञातिविच्छेदकोनी दृष्टिए दारिद्र्य अने अज्ञाननां पात्रो तिरस्कारने बहिष्कारने पात्र लागे छे? शुं शब्दोमां अने सहभोजनमांज ऐक्यनां सर्व तत्त्वो समाई जाय छे? शुं भग्न ज्ञातिओनां छिन्नभिन्न अंगोमांथी नूतन धन ज्ञातिओ, अंग्रेजी ज्ञान ज्ञातिओ, अने **अहोरूप महोध्वनिः** करनार भुंगळीआ सम्प्रदायो सीवाय कंई विशेष नथी थवानुं? ज्यां सुधी जीर्ण रोमना भभकेदार शहेनशाही प्रमाणे हिन्दना नेताओ पोताने सामान्य वर्गथी दूर राखशे अने एक न्हाना वर्गनी सकास खुशामतथी-वेपारीतालीओथी-बेकदर श्लाघाथी पोताने कृतकृत्य मानशे, त्यां सुधी तेओनी कीर्ति कदाच इतिहासना बाह्यदर्शी पानाओमां झळकशे तोपण दीनदेशना हृदयमां अद्रि उपकार वृत्ति उद्भावववा समर्थ थशे नहि अने तेओनुं गौरव समाजना चित्तनी किनारने आछो स्पर्श करी उडी जशे. अनेक व्यक्तिओने सामान्य

आक्षेपो बराबर बन्ध बेसता थवाथी व्याक्तिक आक्षेप रुप लागशे. परन्तु व्यक्ति मारुं लक्ष्य नथी. कोई एक व्यक्तिने एटलुं गौरव आपवा मारो विषय मने ना पाडेछे. जेना व्यक्तिक गुण के दोषनी हिन्दपर कंईपण अगत्यनी असर थाय एवी व्यक्तिनां किरणो हजु क्षितिजमां गूढ हशे. दृष्टिमर्यादामां तो नथीज.

आ गाढ तिमिरमां असंख्य दीपको यथाशक्ति पोताना अल्प वर्तुलोमां ध्रुजतो प्रकाश नाखी रात्रिव्यवहारमां अगत्यता धरावी रह्या छे. छतां ते दीपको पण अति अगत्यना छे अने आपणां सहृदय मानने पात्र छे. तेओ दिवाकर नथी तो पण स्वयं-प्रकाशी तिमिरनाशक रत्नो छे, अने यथासमय यथाशक्ति पोतानी फरज बजावे छे. शक्तिनी महत्ता करतां हेतुनी विमलता अने धर्मतत्परता कंई ओछां स्तुतिपात्र नथी. मनुष्यनी बुद्धि अमोघ नथी, अने तेथी भूल थाय ए संभवे छे; परन्तु विजयवन्त जुलिअस के ऑकटेविअस करतां पराजीत ब्रुटसनुं गौरव सहस्रगणुं वधारे छे.

आ सर्व अंग्रेजीना अति उपयोगनुं परिणाम छे एम विचार करतां स्पष्ट जणाया विना रहेशे नहि. हिन्दमां घणी हिन्दी सभाओ छे छतां तेओने हिन्दी वाणि साथे शुं वेर छे ते समजातुं नथी. तेओनी वाणि तेओ हिन्दी होय एवुं लेश पण सूचवती नथी. समस्त हिन्दनी हिन्दी सभाओ–संस्थाओ पण जाणे केम विदेशीओने संबोधवा के स्वदेशीओने पोतानुं पर-

भाषाज्ञान देखाडवा बेठी होय तेम गम्भीर मुखे विदेशीय ध्वनिथी स्वदेशीय कर्णमां कर्कश-रुक्ष आघात करे छे, अने गूढ अंग्रेजीमांथी हिन्दनी भाषामां स्वच्छन्द भाषान्तर करनाराओना श्रम खपती अने किमतमां वधारो करे छे. महान् वेपारीओ पोतानो माल छुटक व्यक्तिओने परबारो आपवो ए पोतानी महत्ताने अण छाजतुं लेखे ते ठीक छे परन्तु तेम करतां तेमने पोताने मळवानो घणो नफो ए दुभाषीआ एजन्टो लई जायछे अने घणीवार मिश्रणथी मालमां फेर करी मूळधणीनी कीर्तिने अने अन्तिम ग्राहकना स्वार्थने हानीकरे छे ए वात तेओ भूली जाय छे. अर्थशास्त्र अनावश्यक मध्यस्थोने भार रूपज गणेछे.

ज्यारे अन्तःसत्वनो अभाव होय छे त्यारे विचार गाम्भीर्यनुं स्थान भाषाक्लिष्टता ले छे अने सरल स्पष्टता ए सामान्य तुच्छता तरीखे वखोडी कहडाय छे. दरेक भाषाने आवो जमानो आवेछे. लेटीन, ग्रीक अने संस्कृतमां ए जमानाए असर करी देखांय छे. सर्वत्र लखनाराओनो मोटो भाग हृदयने—ऊर्मिना वेगने-प्रबल आवेशने अधीन थईने नहि परन्तु कीर्तिना ख्यालथी—क्लेशमय प्रयत्नथी पराणे खडी करेल कल्पनाथी डगले डगले आगळ वधेछे. तेओना हृदयमांथी स्वाभाविक धोध वहतो नथी परन्तु बिन्दुए बिन्दुए जल एकत्र करी तेओ धोधनो देखाव करवा जाय छे. आम साहित्य अने क्लिष्टता ए बे विरुद्ध तत्वोनो योग थाय छे अने ए अघटित घटनानुं मान जाळववा सरलतानी

निन्दा थाय छे. केटलीएक वार विचार अने रसना अभावने ढांकवा गम्भीर अने कोमल मधुर शब्दोनी अर्थहीन रचना रचाय छे. आ सर्व पंडित मान्यता छे. एज पांडित मन्यता घणी वार युवकोने अने महा पुरुषोने पण मातृभाषानी अवगणना करवा प्रेरे छे. अने अंग्रेजीमांज तेमनां वांचन लेखन अने भाषणने पूरी राखे छे. ए जोतां खेद थाय छे. मारा जेवा अंग्रेजीना अल्पज्ञानवाळाए पोताना विचारो ए पादशाहोने केवी रीते नझर करवा?

एक वखत एवो आवशे के ज्यारे अभिमानने आवश्यकता आगळ मस्तक नमाववुं पडशे अने दम्भने सत्यना प्रकाशथी नासी जवुं पडशे. ते क्षणे हिन्दना उदयनुं प्रथम किरण पृथ्वीनां उच्च शृंगोने सुवर्ण कान्तिथी अभिषिंचशे. उषानी लालिमानो भास थाय छे.

कलानो विजय कुदरतना अनुसरणमां छे. प्रकृति प्रवाहना बळनो आश्रय लेवामांज तेनुं सर्व सामर्थ्य समाएलुं छे. सहज भाषानो त्याग अने कष्टलभ्य भाषा द्वारा ज्ञानवहन ए शक्तिशास्त्रना सर्व सिद्धान्तोनी विरुद्ध छे. अल्पतम शक्तिव्ययथी महत्तम साध्यनी सरलतम शीघ्रतम सिद्धि ए सर्व विरोधनां मुख बन्ध करवा सम्पूर्ण छे. विचार ए नित्य चैतन्यमय आत्मा छे. वाणि ए तेने व्यक्त करनार उपाधि देह छे. देहनुं देहत्व—तेनी सार्थकता एज छे के जनभूमिमां एज आत्माने कार्यक्षम व्यवहारयोग्य बनाववो. देहहीन आत्मामां तेनुं आत्मत्व चैतन्यत्व अदृष्य पण रहेलुंज छे परन्तु

आत्माहीन देह तेनुं देहत्व साधनता गुमावी दे छे. अंग्रेजी भाषाने अति महत्व आपनाराओ आ वात भूली जाय छे अने हिन्द-विचारना भोगे विदेशीय वैखरीनी उपासनामां पांडित्य गणेछे.

अंग्रेजी भाषा-ऐक्य साधवाने बदले तेनी सिद्धिमां एक विघ्न रुपज बनी छे. दुष्प्राप्यताने लीधे सामान्यवर्गथी ते दूर रही छे अने प्रान्तिक व्यवहारमाटे एक कामचलाउ साधन रुप बनी भाषा ऐक्यनी खोट जणावा न देतां तेनी सिद्धिना स्वाभाविक उद्भवमां अने सहेतु प्रयत्नमां महान् अन्तराय रुप बनी छे. भगिनी भाषा-ओने पोताना मध्यस्थपणाथी एक बीजीथी दूर राखी तेमना परि-चय परस्परअसर स्नेह अने ऐक्यनो तेणे अवकाश आववा दीधो नथी. ए आडतीओ खरा वेपारीओने परस्परथी अज्ञात राखवामांज काम आव्यो छे. मध्यस्थना एक पण शुभ गुण विना बधा दोषोनुं ते आश्रय स्थान छे. ज्यां गुणनो लेशपण देखाव छे, त्यां ते गुण बाह्य अने अल्प होय छे ज्यारे तेना दोषो नैसर्गिक अने आन्तर-तम जीवन तत्त्वना विनाशक छे. अंग्रेजीना अति परिचयथी बन्धाई गयेल दुराग्रह टुंक द्दष्टिने आ विचारोमां असम्भवित मूर्खतानुं भान थशे परन्तु सत्यने मतनो भय नथी. दुराग्रहो, अज्ञान, विघ्न संतोषीपणुं, निष्कारण विरोध, सर्वने परिणामे सत्य आगळ मस्तक नमाववुंज पडशे. घणाओने आ विचार देश कालथी विरुद्ध लागशे. खरुं छे. परिस्थितिनो विचार अयोग्य नथी. परन्तु तेनो अत्यादर ए उन्नत उड्डियान विरोधक जडता छे. सुज्ञ पुरुषो

तटस्थ दृष्टिए मूर्खता गांडाई अने अभिमानमय मानेला तरंगो उछाळाओ तटभेदक सावेग गर्जता प्रवाहोमां रसमय जीवन अने पोषक उत्पत्ती तत्त्वनां असंख्य महान् परमाणुओ रहेलां होय छे. बालक चित्तनी अस्थिर अगंभीर अज्ञान बलहीन उन्मादी वृत्तिने मोहित करती क्षणभंगुर निराधार पतंग सम लागती गगनविहारी तरंगित ध्वजलेखा भावी ज्वलन्त साम्राज्यनी अग्रगामिनी दिव्य उत्साह पताका सिद्ध थाय छे. दिशाकालना ज्ञानहीनने अस्त-जन्य लागती लालिमामांथी तिमिरनां दल भेदतुं प्रकाश प्रसारतुं प्रभाकरनुं सुवर्णमय बिम्ब प्रकटी नीकळे छे. असाधारणता सर्वथा मूर्खताज नथी होती. नूतनता विना प्रगति नथी सम्भवती. अनुभव ए महान् छे. तेनो अनादर ए मूर्खता छे. अनुभव-भूमि विना अनुमान निराश्रित बनी जायछे परन्तु छतांए अनुमानना उपयोगविना अनुभव निरर्थक बनी जायछे. अनुभवनो लाभ लेवा इच्छनारे अनुमाननो उपयोग करवोज जोईए. अनिश्चयात्मक आ विश्वमां निश्चितताना अमोघताना डहापणभर्या लागता ख्या-लनुं अवलम्बन प्रवृत्तिनो मार्ग बन्ध करेछे. जोखम खेड्याविना मोटां कार्यो कदी बनी शकतांज नथी. इन्गलन्डना पहेला जेम्सनी माफक अतिझीणवट करनार पंडितमन्य भींत भूले छे. जलना बिन्दु बिन्दुनुं प्रथक् प्रथक् सूक्ष्म अवलोकन करवामांज गुंथाईजनार अनन्त अगाध महासागरनुं भव्य गाम्भीर्य अनुभवी शकतो नथी. परमाणुओनुं निरीक्षण करनार हिमागिरिनी गगन चुम्बी अद्भुत महत्ता जोई शकतो नथी. क्षुल्लकचित्तो तेमनी क्षुल्लकतामांज तेमनी

पंडितमन्य क्षीणवटमांज तेमनी क्षुद्र निपुणतामांज अभिमान मान्या करे छे. परन्तु हिन्दनी नैसर्गीक उदारतामां ए अल्पताने अवकाश नथी. हिन्दमां परमार्थ ए उत्कृष्ट स्वार्थ छे. चंचल परिस्थिति करतां स्थिर अविचल सिद्धान्तो हिन्दना चित्तने वधारे आकर्षे छे. अने पश्चिमात्य अल्पदर्शी वेपारी विचारोए ज्यां सुधी आपणां चित्तोने कलुषित नथी कर्यां त्यां सुधी महान् लोकोत्तर अर्थो साधवा माटे आपणा जेटली पात्रता बीजी कोईपण प्रजा धरावती नथी. [illegible] अनुकूलता नहि परन्तु दीर्घ परिणाम दर्शी विमल न्यायना सिद्धान्तो आपणा वर्तनना प्रेरक छे. विघ्न के विरोध नहि परन्तु अन्याय अने असत्यनुं भान आपणुं निरोधक छे. क्षुद्र प्राणित्व नहि परन्तु दिव्य चेतनत्व आपणुं मनुष्यत्व छे. वर्तमान नहि परन्तु नित्यता आपणो समय छे. सरलता नहि परन्तु श्रमलभ्य उत्कृष्टता आपणुं साध्य छे. व्यक्तिक एकलपेटापणुं नहि परन्तु सामाजिक न्याय्य गौरव आपणो स्वार्थ छे. ए विचार–आपणुं आर्यत्व आपणामांथी सर्व क्षुद्रताने नसाडी मूकवा, अल्प व्यक्तिक जड लाभ हानिना ख्यालने नष्ट करी आपणी शक्तिने विमलतर महत्तर साध्यना साधनमां उत्साहथी हृदयना अनिवार्य उमळकाथी प्रेरवा समर्थ छे.

भणनाराओ अत्यारे जीज्ञासाथी ज्ञानमाटे नहि परन्तु डीग्री अने तेथी मळी शकता कमाणीना रस्ताओ माटे भणेछे. आपणी आ नवी पद्धति उदरपोषण माटे लाभकारक नीवडशे नहि अने नोकरी के स्वतंत्र धंधाओ माटे सर्वमान्य लायकात आपशे नहि.

एवुं प्रथम दृष्टिए लागेछे अने तेथी आजीविकाना अभावथी मरण पामता बचवा माटे अंग्रेजी केळवणी ए एकज मार्ग छे एम घणाओने देखाय छे. परन्तु ए भ्रान्ति छे. आजीविकाना पूर्ण स्वतन्त्र मार्गोमां भाषा नहि परन्तु ज्ञानज मुख्य वस्तु छे. तेथी खेतीवाडी, व्यापार, हुन्नर, उद्योग, ए सर्व मार्गो अंग्रेजी नहि जाणनार माटे खुल्ला छे. हिन्दनो आन्तर वाग् व्यवहार अंग्रेजीना अभावे हिन्दी बहु सारी रीते चलावी शकशे अने बहारना व्यवहार माटे तो बहु थोडाज अंग्रेजी जाणनाराओनी जरूर पडशे. तेटला अंग्रेजी जाणनाराओ आपणे खुशीथी नीपजावी शकीशुं. आपणे अंग्रेजी साथे कंई विरोध नथी परन्तु तेनी अनावश्यक उपासनानो तथा व्यर्थ शक्तिव्ययनो निरोध ए आपणुं कर्तव्य छे. अंग्रेजीनो बहिष्कार नहि परन्तु तेनी अनिवार्यतानो प्रतिकार आपणे करवानो छे. स्वार्थ अने आवश्यकताथी प्रेराई अंग्रेजी अभ्यास करनाराओ माटे आपणे पण अंग्रेजी शिक्षण राखी शकीशुं. भाषान्तरकारो माटे पण आपणे एतो आवश्यक छेज; मात्र अंग्रेजी अभ्यास फरजीआत मटाडी व्यक्तिनी स्वतन्त्र इच्छाने अधीन बनाववानो उद्देश छे. अंग्रेजी अभ्यासने अंग्रेजीमां अभ्यास मटाडी अंग्रेजीनो अभ्यास बनाववो छे. अंग्रेजीने ज्ञानवाहिनी मटाडी अपर भाषा बनाववी छे. मोटो वर्ग जेने ज्ञान आवश्यक छे अने भाषा साथे बहु संबन्ध नथी तेने माथेथी अनावश्यक भार ओछो करवामां सर्व सम्मत थशे एम हुं धारुं छुं. ए उपरांत ए पण ध्यानमां राखवानुं छे के आपणेज बहारना आखा विश्वनी

सरलता खातर आपणा हितनो समग्र भोग आपी देवानो नथी. व्यवहारमां परस्पर स्वार्थ होय छे अने तेथी व्यवहारने सुगम करवानो एकज नहि परन्तु उभय पक्षनो हेतु अने धर्म छे. उभयनो तेमां स्वार्थ छे. एक पक्ष जो खुशामतखोर गरजाळ अने स्वमानहीन न बने तो बीजो पक्ष मानथी तेने नमे छे अने उभयपक्षनां सम-आधानथी सम-भोगे सम-लाभे व्यवहार चाले छे. परदेशी व्यापारीओ हिन्दीना ज्ञानने लाभकर जाणी मान आपे अने व्यवहार कोईवार हिन्दीमां कोईवार अंग्रेजीमां एम यथानुकूल चाल्या करे एज योग्य छे. जापान अंग्रेजी जाणतुं नथी परन्तु तेथी कंई तेनो समग्र विश्व साथेनो व्यवहार बन्ध नथी. सरकारी नोकरी माटे हुं अंहि बहु कहेवा नथी मागतो. मात्र एटलुंज जाणवुं बस छे के प्रजाने जो के राजा साथे व्यवहारमां घणो स्वार्थ छे परन्तु राजाने प्रजासाथेना व्यवहारमां कंई ओछो स्वार्थ नथी. हिन्दनी भाषाथी इन्ग्लन्ड जेटले अंशे अज्ञात छे तटले अंशे ते हिन्दनो पूर्ण लाभ लेवा असमर्थ छे. शासित प्रजानुं सम्पूर्ण स्पष्ट ज्ञान जे शासक सत्तानुं महत्तम बळ छे ते ते विना सम्भवतुं नथी. आपणी डीग्रीओने विज्ञप्ति कर्या छतां अश्रद्धेय व्यर्थ गण-वानुं कंईपण दक्ष कारण सरकार शोधी शके तोपण तेथी बहु हानी नथी. सर्व डीग्रीओनी—ज्ञाननी कीम्मत कंई सरकारना स्वीकारमांज नथी. स्वतन्त्र मार्गनुं सेवनज अत्यारे हिन्दनी उन्न-तिनुं सर्वोत्तम साधन छे अने खेतीवाडी वेपार हुन्नर उद्योग विगेरेमांज आपणी आधुनिक आर्थिक प्रगतिनां बीजो छे ए

विचार सर्व आशंकाओने दूर करवा बस छे. विद्वान् चिन्तकोने नित्य अभ्यासीओने निभाववा आपणी केळवणीनी संस्था आपणो भारत समाज संपूर्ण थशे. वैश्यवर्णनी उन्नति सधातां तेनां पोषक बळथी सर्व वर्णनो सर्वत्र विजयज थशे. कलाने विद्याने आश्रय आपवा उत्तेजित करवा तेमनी लक्ष्मी समर्थ थशे. ग्रहस्थाश्रमनी पूर्णतामां संन्यासीओनो निर्वाह रहेलोज छे. वानप्रस्थोनी शान्त विचार शक्ति पौरजननां उपानयनोथी पोषाय छे-प्रगतिमां प्रेराय छे. रसहीन कोमलताहीन वित्तोपार्जनदृष्टिने ए पवित्र अने आनन्दमय बनावे छे. ए स्वार्थमां शुष्कतामां रस अने जडतामां चैतन्य भरे छे. ते अनन्य परायण विचारकोनुं विदेह जीवननुं अने अनन्य परायण वित्तोपार्जननी जड उपासनाना देहनुं संयोजन करी साधनना उपयोगथी अने विचारना अनुसरणथी सिद्धिने जन्म आपे छे.

एक मूर्ख दलील एवी छे के अंग्रेजी शब्द समूहमां जे विचारो छे तेने व्यक्त करवा हिन्दनी भाषामां शब्दोज नथी. अंग्रेजीमां असंख्य शब्दो एवा छे के जेने माटे बराबर बंध बेसता शब्दो हिन्दी भाषामां मळी शकता नथी अने तेथी अंग्रेजी शब्दो वापर्याविना चाले तेवुं नथी. जरापण विचार करनारने तो आनो उत्तर देवोज न पडे. छतां आम कहेनार घणा छे अने तेथी तेनो पण उत्तर अनावश्यक नथी. प्रथम तो अंग्रेजी शब्दो साथे आपणे कांइ वेर नथी. अंग्रेजीमांथी जरूर होय तो शब्दो लेवा तेथी आपणी भाषा कंइ अंग्रेजी बनी जती नथी. विचारने अर्थने

व्यक्त करवामां सरलतम अने स्पष्टतम शब्दोनो उपयोग करवो एज आपणो हेतु छे. वळी शब्दो–पदो ते विचारोनां प्रतिनिधि छे. जे विचारमां आवी शके छे तेने माटे भाषा वाङ्मय रूप उपजावी शके छे. विचार भाषाने स्वयमेव विकसावे छे. संस्कृतमां Oxygen माटे शब्द न होय तेथी संस्कृतमां Oxygen नुं तत्त्व समजवा समजाववानी शक्ति नथी एम सिद्ध थतुं नथी. पदनी योग्यता तेना तत्त्वबोधक पणामां छे. ज्ञानी वृद्धिथी द्रव्यना गूढ गुणो ज्यारे प्रकाशमां आवे छे अने तेनुं प्रथमनुं लक्षण ज्यारे दोषमय सिद्ध थाय छे त्यारे ते असत्य लक्षणने आधारे अपायेलुं अयथार्थ नाम अशास्त्रीय बने छे. तेनो त्याग अने बीजां योग्य नामनो स्वीकार ए तत्त्वदृष्टिए हितकर लागे छे. Oxygen तेना नामार्थ प्रमाणे acid नुं आवश्यक अंग नथी. ते अने तेवां बीजां नामो त्याज्यज छे. तेने वळगी रहेवा करतां संस्कृतमांथी तेनां तत्त्वनो बोध करनार शास्त्रीयनामो उपजाववां ए भाषानी–विचारनी अने शास्त्रीय पद्धतिनी प्रगतिने वधारे इष्ट छे. संस्कृत ए संस्कृत भाषा छे. तेनी एक खास खुबी तो ए छे के तेना सर्व शब्दो विचारना मूळने स्पष्ट आश्रये रहेला छे. विचारबीजरूप धातुओमांथी तेनो समग्र शब्द कोष वृद्धि पाम्यो छे. तेना पदो विशेषणात्मक छे अने नामनो अभाव होय त्यां विचारनां पृथक्करणथी धातु अर्थज्ञानथी विशेष गुणना कथनथी नूतन विचार एक मितशब्दमां स्पष्ट सरलताथी अंशांश यथार्थताथी व्यक्त करी शकाय छे. भाषामां

भाषा तरीखेनी खरी खुबी मूळतो एज छे. भव्यता मधुरता आदि गुणो जे संस्कृतने दिव्य बनावे छे तेने जोवा असमर्थ चक्षुओ पण आटलुं जोई शके तो घणुं छे.

बीजा अनेक विरोधो हशे जे मने उपेक्षणीय अने केटला-एकने गंभीर लागता हशे. परन्तु चर्चा ए सर्वनुं संतोलन करशे. जो चर्चा करनाराओमां हृदय हशे जो पंडितता नहि परन्तु जिज्ञासा तेमना वादनी प्रेरक हशे तो सत्यनुं मुखबन्ध पूषन् उघाडी आपशे. अस्तु. जेओमां अन्तःकरण होय, जेओ हिन्दमाटे, पोताना देशबन्धुओ माटे लेश पण लागणी धरावता होय तेओने पोताना आ विषयपरना अनुकूल के प्रतिकूल खरा विचारो जाहेर करवा हुं नम्र विज्ञप्ति करुं छुं. केटलीएक बुद्धिओ बीजाना विचारोमां मळतुं थवामां, ते विचारोने उपाडी लई कार्यभूमिपर मथवामां पोतानी महत्ताने हानी लेखे छे. अने तेथी दलीलो मळे तो विरुद्ध थवामां अने न मळे तो तिरस्कारमय उपेक्षाथी परविचारोने तर-छोडी हसी कहाडवामां प्रवृत्त थाय छे. परन्तु अभिमान अने उपेक्षा ए गौरव नथी. भूलकरनारनी भूलने सुधारवी अने सत्य कहेनारने पोताना मतना मळतापणाथी वधारे आत्मश्रद्धा आपवी, कार्य करवा वधारे उत्साहवान् वधारे समर्थ बनाववो, ए सहृदयतानो स्वाभाविक धर्म छे. कोईपण विचारनो कोई इजारो राखी शकतुं नथी. अमुक विचार जनसमाज समक्ष छापेल रूपमां अमुक व्यक्तिए मूक्यो तेथी ते कंई तेनोज पेटन्ट थई जतो नथी. जे कोई तेनुं

तत्त्व समजी अनुभवी शके छे अने तन्मय बनी तेना प्रसार माटे सप्रेम प्रयत्न करे छे तेनुं प्रभुत्व ते विचार ऊपर ओछुं नथी. विचारना उत्पादको प्रायशः अन्धकारमां अदृश्यज रहेछे अने कीर्ति गौरवनो मोटो भाग कार्यवाही नेताओज भोगवे छे. ए कार्य-दक्षो विना विचार निरर्थक मरी जायछे. पारका विचारने पण पोतानो करी लई यत्न करनार विचारना ऊत्पादक जेवोज बनी जाय छे. तेना गौरवमां तेथी क्षति थती नथी. परन्तु तेनी निरभिमान सहृदय गुणज्ञता तेनी महत्वकान्तिमां वधारो करे छे. पोताना मतने वळगीरही पोतानी अमोघता सिद्ध करवा जतां जे हृदयमान नथी मळतुं, ते मान निष्पक्षपात निरभिमान, विचार संतोलन, स्वअ-सत्यत्याग, अने परसत्य स्वीकारथी सहज प्राप्त थाय छे. कीर्तिना लोभने लोक स्नेहपिपासाने सत्यकामनाने संतोषवा आटलुं कहेवुं बस छे.

जो सहृदयता होय तो केळवणी ए धनने लेश पण अधीन नथी. धननो अभाव खरी केळवणीना मार्गने बन्ध करवा कदी समर्थ थतो नथी. ज्यां आडम्बरनी उपासना छे त्यां धनना ढगला-ओनी अपेक्षा रहे छे. धनमां लाभ करवानी शक्ति छे ए खोटुं नथी, परन्तु धनने अधीन होवानुं केळवणीनां मूळतत्वो माटे असं-भवित छे. धनिक सहायको तुरतमां मळे के न मळे तेथी आपणी प्रगतिने अटकवानुं कंई कारण नथी, धन आपणी केळवणीनुं साधक थाय के न थाय ते आपणे जोवानुं नथी. आपणे तो

केळवणीथीज धन आदि सर्व सम्पत्तिओ उद्भवाववानी छे. सहायनो तिरस्कार करवो ए मूर्ख अभिमान छे परन्तु सहाय उपर अति आधार न राखतां स्वाश्रयथी अने स्वप्रयत्नथी आपणी स्थिती तथा उन्नति साधवी ए मुश्कील नथी. "आपणे" ए शद्बमांथी धनिकोनो बहिष्कार नथी थतो परन्तु कालावाला जे धन कढ्डावी शके छे तेनी आपणे आवश्यकता नथी. देशभक्ति प्रजाप्रेम जे सेवा जे सहाय करे तेमांज आपणुं बळ समाएलुं छे. वर्तमान सर्व संस्थाओ जे धनने एकत्र करवामां अने तेनो व्यय करवामांज महत्व दर्शावे छे ते जोतां धननी लेश पण उपेक्षा असम्भवित लागशे. परन्तु आत्मानी उपासनामां जड साधनो लगभग नकामां जेवां छे ए स्पष्ट जोई शकाशे. संख्याबन्ध विद्यार्थीओ, साथे एक स्थळे रही शके परस्परना तथा शिक्षकोना साहचर्यनो लाभ लई शके ए लाभकारक छे, ए खरुं छे; परन्तु धनिकोने सगवडवाळाओने वधारे लाभ आपवा दरिद्र अने आकुल वर्गनो विद्यादाननी पात्रतामांथी बहिष्कार करवो ए मूर्खता छे. दूर प्रदेशमां हाजर रहेवुं ए खरचाळ छे. ते माटे करवो पडतो कुटुम्बनो त्याग हिन्दनी दरिद्र स्थितिमां घणाओ माटे न बनी शके तेवो छे. कुटुम्ब भुखे मरी जाय रक्षकना वियोगे छिन्नभिन्न थई जाय ए कुटुम्बना अग्रेसर विद्यार्थी माटे ईष्ट के धर्म्य नथी. ह्रदयवाळाथी ते बने तेवुं नथी. विद्वत्तानी विद्या शुभना साधनमां व्यर्थ छे. विद्यालयोमां आवश्यक हाजरी आम केळवणीना प्रसारनी नैसर्गिक बाधक छे.

शिक्षकोनी पंडिताई अने विद्यार्थीओनुं टोळुं जे लाभ आपवा समर्थ नथी ते लाभ, आन्तरजिज्ञासा सस्नेह उपासन एकान्त विचार अने शंकाओनुं सत्ताने मुखे नहि परन्तु बुद्धिनी दलीले समाधान, ए सर्वथी मळी शके छे. केळववुं अने ढोर चारवां ए बे एक वस्तु नथी. लाकडीथी एक मार्गे हांकवानुं काम बुद्धिना प्रदेशमां व्यर्थ छे. विविध चित्तोनी विविध शंकाओ, विविध व्यक्तिओनी विविध ग्राहक शक्तिओ ए सर्व माटे कोलेजनी हाजरी अने समान शिक्षण करतां स्वतन्त्र विचार अने गमे ते स्थळेथी ज्ञान शोधवानी छूट घणां वधारे हितकर छे. मान्य व्यक्तिओना शब्दो निःशंक स्वीकार पामे छे अने बुद्धि तेना अर्थने स्पष्ट समजी न शके तोपण ते शब्दसमूहनो प्रतिघोष विद्वत्ता तरीखे स्पष्ट ज्ञान तरीखे मान्य थाय छे अने थशे ए विचार विद्यार्थीओना प्रयत्नमां गोक्षीना सेवनने अने विचारनी उपेक्षाने स्थान आपे छे. प्रोफेसरोना शब्दोने जे महत्व आपवामां आवे छे ते ओछुं करी विद्यार्थीओनी दृष्टिने ज्ञाननी स्पष्टता तरफ आकर्षवी ए घणुंज आवश्यक छे. हाजरीनी अनावश्यकता अमोघ बुद्धिवाळा देखाता अने वारंवार परीक्षक पद मेळवता अतटस्थ शिक्षकोथी दूर रहेनाराओमां, परीक्षामां विजयनी आशाने दृढ पाया पर स्थापवानी अभिलाषा, स्पष्ट निःशंक समजणनी उपासनाने प्रसरावे छे. शब्दोना प्रतिध्वनिमां विजय देखाय त्यां सूधी मोटो भाग विचारनां गूढ तलने स्पर्श करवा प्रवृत्त थतो नथी. ए दोष दूर करवा बीजां अनेक साधनो साथे हाजरीनी आवश्यकतानो त्याग पण

हितकर छे. हाजरीनी आवश्यकतामां विद्वान् मुखनी वाणि सांभळवानो अने मोटा समुदायमां त्वरित गतिमां बने तो कोई वार शंकाना निवारण अर्थे प्रश्न पूछवानो अवकाश छे परन्तु ए अल्प लाभ, केळवणीना विस्तारने सत्ताथी संकुचित करता महादोष साथे सरखावतां, तुच्छ छे. प्रोफेसरोनां मुख ज्यारे सर्व ज्ञान प्रवाहनां मूळ रूप बने छे त्यारे घणा विद्यार्थीओने ज्ञाननां स्वतन्त्र साधनोनुं भानज नथी होतुं अने घणा खरा तेने अनावश्यक मानी तेथी विमुख रहे छे. जिज्ञासा उत्पन्न करवाने अने ज्ञानना मार्गो बताववाने बदले परीक्षक प्रोफेसरोनी नोटस अने मूळ लेखोना शब्दोनुं शुक पठन परीक्षामां वधारे मार्कस लावी परिछिन्न गोक्षीने उत्तेजन आपी सर्वदेशीय विचारनो ह्रास करवाना साधन रुप बने छे. अत्यारनी डीग्रीनुं गौरव तेनी यथार्थ पात्रतामां नहि परन्तु तेने प्राप्त करवानी काठिनतामां रहेलुं छे. आपणी प्रवृत्ति करंडीओ कातरी सर्पना मुखमां पडनार उंदर जेवी छे. मातृभाषामां सरल स्पष्ट पुस्तको लखाय व्याजबी किंमते के पुस्तकालयो द्वारा ते सर्वने सुलभ थाय अने परीक्षामां हाजरी अने गोक्षीने बदले स्वतन्त्र धारण अने कथन शक्तिनो विचार आदर पामे तो घेर घेर ज्ञान प्रसरे. दरिद्रो अने कुटुम्बजाळमां व्यवहारी उपाधिओमां फसाएलाओ पण शुद्ध ज्ञान मेळवी तेनो लाभ लई तथा आपी शके. आखां टोळांनी विविध बुद्धिने मित समयमां एक साथे संतोषवी अने विकसाववानुं

काम एक शिक्षकनुं नथी. शिक्षकनी महत्ता शिष्योना शिष्यत्वना भेदने व्यर्थ करी शकती नथी. निरंकुश जिज्ञासा ज्ञानने शंकाना समाधानने स्वयमेव शोधी कहाडे छे. ते जिज्ञासाने स्वतन्त्र रहेवा देवी एज इष्ट छे. ज्ञान मेळववानो श्रेष्ठ मार्ग बताववो ए ठीक छे परन्तु साधननी योग्यता साधकनी अनुकूलता उपर छे. जेओने माटे ए मार्ग दुर्गम के अगम्य होय तेओनां अन्य मार्गे मेळवेलां ज्ञानने ज्ञान तरीखे न स्वीकारवुं ए ज्ञानप्रदेशपर सत्तानो त्रासजनक जुल्म छे. अन्ध गाडरीओ प्रवाह भले तेनी उपासना कर्या करे. जेने दृष्टि छे जे दूर जोई शके छे तेने माटे हिन्दनो भूत काल न्याय्यतम इष्टतम मार्ग बतावे छे. समग्र जनसमाजनां चित्तने उच्च स्थिति पर लाववा माटे ज्ञानपरना तेना जाहेर स्वीकार परना सर्व कत्रीम अंकुशोनो नाशज करवो आवश्यक छे. रुप तरफ बहु लक्ष न आपतां आत्माना विकास माटे मथवुं एज घटित छे. आपणी नवी केळवणीनी पद्धतिमां हाजरीनी आवश्यकता कहाडी नाखवी अने खानगी अभ्यासथी परीक्षामां बेसवानी सर्वने छूट आपवी ए घणुं लाभकर थशे एम देखाय छे. केळवणी वेचवानो इजारो राखवो ए कोई पण संस्था माटे मानप्रद नथीज. धातुनां तत्त्वनी परीक्षा करी दम्भ अने छेतर पींडीने अटकाववां अने योग्यनी योग्यता सर्वनी दृष्टि समक्ष मूकवी एटलुं करवुंज घणुं छे. संस्थाए शिक्षण नज आपवुं एम मारा कहेवानुं तात्पर्य नथी. परन्तु संस्था जेने शिक्षण आपे तेनीज परीक्षा करे एम न करतां संस्थानी परीक्षा सर्व परीक्ष्यो माटे खुल्ली रहे अगे

सर्वने पोताना ज्ञाननी कींमत अंकाववानो अवकाश मळे ए घणुं लाभकर मने लागे छे. संस्थानुं पहेलुं काम मातृ भाषामां पुस्तको तैयार कराववानुं छे. बीजुं काम पडतर कीमते के पोतानां पुस्तकालयो द्वारा ए पुस्तको सर्वने सुलभ करी देवानुं छे. त्रीजुं परीक्षा लेवानुं छे. आ त्रण आवश्यक कामो बहुधननी अपेक्षा राखतां नथी अने तेथी आरम्भने सुगम बनावे छे. सामान्य तेमज खेती-वाडी वेपार हुन्नर उद्योग कलाओ विगेरेनुं जेटलुं ज्ञान वाणिथी आपी शकाय तेवुं छे तेटलुं आपवुं तथा लेवुं आ रीते सर्वने सुकर बनशे. जे ज्ञान केवळ वाणिथीज विचारथीज आपी शकातुं नथी अने जड प्रयोगनी अपेक्षा राखे छे ते मेळववा माटे धनने अभावे प्रयोगशालाओ उभी न थाय त्यां सूधी लोकना चालु व्यवहारमां घणां साधनो छे. तत्वनो बोध करो अने व्यवहारमां तेनो उपयोग स्वयमेव प्रकटशे. केळवाएल विचार चालु लोक व्यवहारनो उमेदवार तरीखे आश्रय लई अनुभवथी सम्पूर्ण सिद्ध कार्यदक्ष बने छे. खरो अनुभव-अनुभवनो खरो लाभ कर्त्रीम शाळाओ करतां आवां सत्य कार्यालयोमां घणी वार घणो वधारे मळे छे. धननी अल्पता शाळाओने ए सम्पूर्णताए पहोचाडतां घणो समय ले छे. छतां विविधताने एकत्र करी शोधवां न पडे एवां सर्वने सुविदित अने सगवडवाळां स्थळे अल्प समयमां शिष्योने विविध अनुभव आपवा शाळाओ आवश्यक छे अने ए शाळाओमां धन प्रथम जरुरनुं छे. आम केळवणीनी संस्थाना विकासमां धन अगत्यनुं छे परन्तु धन विना

पण जो निःस्पृह हितकर्ताओ कार्यवाहको होय तो केळवणीना आत्माने जगाडी शकाय छे. मातृभाषमां वाङ्मय शिक्षण आपवुं अने परीक्षा लेवी ए बहु थोडा धननी अपेक्षा करे छे. शिक्षकोनी अने परीक्षकोनी लेशपण निःस्पृह सेवा करवानी वृत्ति सर्व कार्यने सुगम बनावी दे छे. आपणा विद्वानोनो ए धर्म छे अने ए धर्मथी भ्रष्ट करवा हृदयना असम्भवित जेवा सम्पूर्ण अभावविना बीजुं कशुं समर्थ नथी. शुं आपणा पंडितो देश माटे पोताना देश बन्धुओ माटे पोतानां व्हालामां व्हालां बाळको माटे तुच्छ धननी उपासनामांथी दररोज एक कलाक पण बचावी शके तेम नथी? जे विद्या हृदयनी उदार भावनाथी शिष्यना अर्थी हृदयने सन्तोषती नथी ते आसुरी छे. जे व्यक्ति समाजनो लाभ लेवा छतां तेनी लेशपण सेवा न करे

तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुंक्ते स्तेन एव सः

ते परस्पर धर्मथी भ्रष्ट थई अन्याय्य वृत्तिनो दोषित बने छे. यज्ञ अने तर्पण आर्योनां नित्य कर्म छे. व्यापक एवां कोई अलौकिक शुभ तत्त्वनुं उपासन तेमनो धर्म छे--तेमनी जीवननौकानो नियामक छे.

आवश्यक धननो विचार पछी करो. जेओमां देशभक्तिनो लेश पण होय, जेओ मानव हृदयनां दुःख अने आनन्द सहानुभूतिथी अनुभवी द्रवित थता होय, जेओमां विमल मनुष्यत्वनो कोमल हृदयभावोनो अंशपण होय तेओने हुं आरम्भ करवा

माटे आमन्त्रण करुं छुं; भक्तिमां हृदयबळमां प्रतिकूल परिस्थितिने, साधनोना अभावने, विघ्नोना आघातने व्यर्थ करवानुं सामर्थ्य छे ए सिद्ध करवा—महान् शक्तिनी क्रियासिद्धि अनुकरणोमां नहि परन्तु सत्वमां छे अने खरा हृदयकाममां उत्साहभर प्रयत्नमां विधिना पण निरोधने भेदवानुं अप्रतिहत बल छे ए विश्वने देखाडवा सहृदयाताने प्रेमने उत्साहने हुं सम्बोधुं छुं

"उद्धरेदात्मनात्मानम् नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैवरिपुरात्मनः ॥
क्लैब्यं मास्मगमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥
नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ॥

प्रयत्न जे सहाय मेळवी शके तेनो विचार न करतां पण कोइ पण सहाय विना केवळ सत्य संकल्पथीज आपणे घणुं साधी शकीशुं ए विचारज—आपणी प्रगतिनी स्वतन्त्रतानुं भानज आपणने विफलताना भयथी मुक्त करवा समर्थ छे. **विजयतु विमलानाम् सत्यकामः प्रयत्नः । अस्तु ।**

जे समय जाय छे ते दिवसे दिवसे अमाप शक्तिनो व्यर्थ ध्वंस करे छे माटे देश बन्धुओ जागो अने शिथिलतानो मन्द-तानो त्याग करी हणाई जतां असंख्य निर्दोष बाळक जीवनोने

दु:खना क्षयना मृत्युना मुखमांथी बचावो. दु:ख दर्द चिन्ता अने अशक्तिथी भरेलां जीवन करतां मृत्यु हजार दरज्जे सारूं छे. ए मृत्युथी पण वधारे भयंकर जीवनना त्रासजनक तापने शान्ति अमृतथी शमावो. चित्त अने शरीर उभयने भक्षीजनार राक्षसी केळवणीना प्रचंड अग्निमां होमातां अबुध बाळकोनुं रक्षण करो. खरुं छे के शरीर जड छे छतां आ जड विश्वमां ए अति अगत्यनो विषय छे. एनो अनादर आपणा चैतन्य विकासमां हानीकर छे. **शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्** ए सिद्धान्त आन्तर विकासना अभिमानमां भूली जवानो नथी. अशक्त देह ज्ञानना आचरणनी उपयोगनी असमर्थताथी देहीना ज्ञानने केवळ भार रुप बनावे छे. ए परवाना विनानी पेटीमां पुरी राखवानी तलवार छे. एनो उपयोग असंख्य काटजन्तुओथी खवाई क्षीण थई व्यर्थ विनाश पामवामांज छे. बाळक शरीरनी आवश्यक उन्नति साधवानो एक मार्ग विद्यार्थीओनां आनन्द सम्मेलनमां रहेलो छे परन्तु मानसिक अने शारीरिक शक्तिनो थतो व्यर्थ क्षय अटकाववो ए पहेलुं काम छे. क्षय (Consumption) नो प्रसार आपणी वर्तमान केळवणीने थोडो आभारी नथी. विद्यार्थीओनां आनन्द सम्मेलन ए शारीरिक विकास साथे प्रजा ऐक्यना भानने पोषवानो एक सुंदर मार्ग छे. सर्व मान्य उत्सव समये रमणीय भव्य स्थले दूर दूर रहेता हिन्द विद्यार्थीओ एकत्र थाय, रमत गमत अने आनन्दथी परस्पर परिचयमां आवी समता एकता

अनुभवतां शीखे, अने शारीरिक कसरतो विगेरेमां आगळ वधनारने मळतुं मान जोई तथा रमतनो आनन्द अनुभववामां तथा तेमां विजय मेळववामां शरीरनी स्वस्थतानी कीमत जाणी, शारीरिक विकास तरफ पण आनन्दथी ध्यान आपे ए प्रजा ऐक्यनो तथा बालकना शारीरिक विकासनो एक रसमय मार्ग छे. मृतप्राय देहनी संजीविनी औषधिमां रसनो कुशल प्रयोगज आवश्यक शीघ्रता अर्पे छे. निरुद्धप्राय रक्त वाहिनीओनां सूक्ष्मतम द्वारोमां पण तेनुं सरल स्वाभाविक सरण अंग अंगमां नवजीवननो त्वरित संचार करे छे. रमत ए बुद्धिने विश्राम अने शरीरने व्यायाम आपी आन्तर अने बाह्य करणोने अति उपयोग के अनुपयोगथी घर्षण के काटथी क्षीण थतां अटकावी कार्य माटे योग्यतम राखवा बनाववा माटे छे. जे रमत मगज उपर बोजो करे छे नैसर्गिक रमणीयताना अभावे मात्र कालक्षेप के व्यर्थ विजयना विचारथीज आकर्षे छे, सेवनमां आनन्दमय तल्लीनता नहि परन्तु कंटाळा भरेल बन्धन उत्पन्न करी व्यायामने रसहीन अने परिणाम दर्शी बनावे छे ते रमत, रमत होवाने योग्य नथी. तेमज साधनोनी अपेक्षा करनार रमतो पण बोजा रुप छे. खास करीने दरिद्र देशो माटे एवी रमतो त्याज्यज छे. मानव-जीवनने सुखी करवामां जेटलो बने तेटलो पराधीनतानो अभाव ए आवश्यक छे. आपणा आनन्दने जेम बने तेम साधनोनी अपेक्षाथी मुक्त स्वतन्त्र राखवो ए सुखी थवानो अने रहेवानो

प्रशस्ततम मार्ग छे. वळी रमतमां बने त्यां आनन्द साथे अनायास शुभ संस्कारोथी हृदयमां उन्नत भावना उपजावनारां तत्त्वने योजवुं ए जडतामांथी पण आन्तर उदयने साधी बेवडो लाभ आपे छे. प्राचीन ग्रीसमां रमतो ए एक अति महत्वनुं तत्त्व हतुं. केवळ असम्बद्ध भिन्न भिन्नज नहि परन्तु विरुद्ध शत्रु संस्थानोमां पण क्षणवार विरोधने शान्त करी सदा माटे एक ऊंडुं ग्रीक ऐक्यभान प्रसराववामां ए रमतोए घणुं प्रशंसनीय काम कर्युं छे. इतिहासनां दृष्टान्तो आपणे विसरी जवानां नथी. भूतकाल ए वर्तमाननो उपदेशक छे. प्रजाकीय प्रयोगो जे प्रयोगशाळाओमां व्यक्ति के समूहनी केवळ जीज्ञासा खातर बनी शके तेवा नथी ते इतिहास आपणी दृष्टि आगळ मूके छे अने तेमांथी सामान्य सिद्धान्तने शोधी कहाडी वर्तनमां तेने योजवामां नीतिना अनुमाननुं डहापण रहेलुं छे.

हुं समग्र हिन्दने हिन्दना समग्र जन समाजने उद्देशीने लखुंछुं छतां मारी भाषा प्रान्तिक छे अने मारा शब्दोमां सर्वने माटे सम्पूर्ण सरलता नथी परन्तु मारा विचारने स्वाभाविक रीते व्यक्त करवामां श्रोतानी वाणि तरफ बहु लक्ष अपायुं नथी. हुं मने पोताने कहेतो समजावतो होउं तेवी रीतेज लेख प्रवाहने बने त्यां सुधी में वहवा दीधो छे कलानां अलंकरणोनी के प्रयत्न लभ्य [illegible] उपासना न करतां विचारधूनमां जे जेम आव्युं तेम ग्राम्य क्लिष्ट के सामान्य शब्दोमां लखी गयो छुं. परन्तु सारग्राहीओ,

ए जड शब्दो तरफ लक्ष न आपतां तेमां रहेला तेना आत्मारूप भावो अने विचारोने लक्षमां लेशे अने तेमानां सत्यनुं अनुमोदन प्रसरण अने कार्यवहन करवा यत्नशील थशे एम हुं आशा राखुंछुं.

अल्पानामपि वस्तूनाम् संहतिः कार्यसाधिका ।

घणुं कहेवानुं रही जायछे. जे कहेवायछे ते अति अपूर्ण अव्यवस्थ असन्तोषकर रूपमां कहेवाय छे. कहेवानी अति आतुरता तीव्र जुस्साथी उद्भवती व्यग्र विह्वलता ए सर्व मने शान्तिथी व्यवस्था करवा असमर्थ बनावेछे. कोई स्थळे निरर्थक विस्तार अने पिष्ट पेषण थई गयुंछे तो कोई स्थळे संकुचितरूप सरल स्पष्टता सूधी पहोंची शक्युं नथी. परन्तु मारो यत्न अहिं पूर्ण थतो नथी अने बीजां मारा करतां महत्तर चित्तोनी सुव्यवस्थित दलीलोनी हुं आशा राखुंछुं तेथी सम्पूर्णता तरफ बेदरकार रही मात्र सूचकता साधवा तरफज लक्ष अपायुं छे. कार्य साधवुं ए मारुं एकनुं नहि परन्तु सर्व देशबन्धुओनुं काम छे. यथाशक्ति यत्नशील थवुं ए हुं सर्वनी फरज समजुंछुं. पोतानी प्रजामां जेने ममत्व होय तेनो एमां महान् स्वार्थ समाएलो छे अने ज्यां स्वार्थ अने परार्थ संयुक्त थायछे त्यां प्रयत्न ए स्वाभाविक छे. मारा गुर्जर शब्दो समग्र हिन्द वांची शके तेम नथी तेथी मारुं सम्बोधननुं प्रथम लक्ष्य गुर्जर समाज बनेछे. केळवर्णानी गुर्जर संस्था स्थापवा अने हिन्दनी अन्याभाषाओ साथे एज जातनी संस्थाओना स्थापन माटे तथा एवी सर्व संस्थाओने संकलित करवा माटे व्यवहार चलाववा आपणा गुर्जरबन्धुओने हुं विनति करुंछुं.

आ उपरांत पाश्चिमात्य केळवणी आपणां निर्मळ जीवन-तत्त्वमां केटलांएक **विषतत्त्वो** प्रसरावे छे तेथी आपणे बहु सावधान रहेवानुं छे. यरपमां सर्व स्थानोमांथी आपणे विचार-स्वातन्त्र्य अने दमामथी अंजायाविनानी तटस्थ विवेकशक्ति ए प्रथम लेवानां छे. आपणामां अन्तर्हित थएलां ए तत्वोने पाछां उद्बोधित करवां अने तेमनी सहायथी आपणो खोवाइ गएलो मार्ग पाछो शोधी कहाडवो एज अत्यारे आवश्यक छे. अनुभवथी संतोषकर सिद्ध थएल सिद्धान्तोने पद्धतिओने दुराग्रहथी वळगी रही इष्टतर मार्गनी अवगणना करनार भयशंकी वृत्तिनी निन्दामांज पोतानी अनुमानशक्ति अने बुद्धिनी उत्पादकतानो विजय माननाराओए समजवुं जोइए के प्राप्तमां सन्तोष ए अन्ध प्रगति करतां सहस्रधा शुभतर अने प्रज्ञतर छे. जेनां वचनो अनुभवथी हितकर सिद्ध थयां छे तेनां वचनोनो स्वतन्त्रताने नामे तिरस्कार करी, जेनां वचनोनी भलामण करनार मात्र नूतनताविना बीजुं कशुं नथी तेनी निराश्रय वाणिनुं अवलम्बन करवामां, तेनी आज्ञानुं मींचेली आंखे अनुवर्तन करवामां, तेना कार्यने मर्कट मूर्खताथी अनुसरवामां लज्जास्पद विध्वंसनीज उपासना थाय छे. स्वतन्त्रता ते स्वतन्त्रताज छे तेमां जूनां के नवांनो भेद नथी. ते सर्व व्यक्तिओने जीज्ञासानो-सत्यनी शोधनो-सर्व संशयना निवारणनो अने दृढ निश्चयनो हक आपे छे. परन्तु ते अल्प ज्ञाननो त्याग करी अज्ञानतिमिरमां झंपलाववानो-अपूर्णता छोडी शून्यमां सम्पू-

णेता मानवानो-ध्रुवना होमे अध्रुवनी उपासना करवानो उपदेश आपती नथी. जुनामां प्रश्नहीन जीज्ञासाहीन श्रद्धाए जो आपणा सिद्धान्तो अने रुढीओना हेतुओ तत्वो अने सार्थकतानुं विस्मरण करावी, आपणी सर्व क्रियाओने केवळ जड रुप बनावी दीधी छे तो भले आपणे पुनः सचेतन थयेली जीज्ञासाथी सत्यनुं शोधन करीए, न समजातां तत्वोने आपणे माटे असिद्ध मानीए, अने सर्वतः सम्पूर्ण सिद्धि उपर आपणां ज्ञाननुं दृढ मन्दिर बांधीए, परन्तु दरेक कार्यना मूळमां कंइ चेतन तत्व रहेलुं होय छे अने तेनो विचार आपणी जीर्ण संस्थाओनो विनाश करतां पहेलां आपणे करवो आवश्यक छे ते भूली जवुं जोइए नहि. जो कल्पनाज विश्वना सर्व व्यवहारो माटे समर्थ होत तो इतिहासकारो अने वार्ता लेखकोमां कंई भेद न होत. जो वर्तमान अने भविष्यमांज मानवनुं सर्व डहापण समाइ जतुं होय तो पछी सृष्टि परनो सर्व ज्ञानभंडार नकामो भार रुप छे. जो उद्धत अभिमान एज सम्पूर्णता होत तो जीज्ञासा ए दोष अने सिद्धि ए मूर्खाइ गणात. जो असम्बद्धता एज तटस्थता निष्पक्षपातीता होत तो न्यायालयोना साक्षी पुरावाओ व्यर्थ बनी जात. जो मान्यता एज सत्य होत तो सत्य ए अवस्तु शून्य बनी जात. जो सिद्धिने अभावे कोइ पण वात मान्य राखतां आपणे अचकाइए ए व्याजबी होय तो जे असत्य सिद्ध थयुं नथी तेने असत्य गणी कहाडवा पहेलां आपणे विचार करवो जोइए, तेमज जो जूनामां जे सिद्ध

न देखाय तेनो आपणे अस्वीकार करीए तो नवामां जेनुं परिणाम आपणे स्पष्ट जोइ के समजी न शकीए तेनो आश्रय लेतां आपणे अचकावुं जोइए. जो परिचयजन्य प्रीति ए दुराग्रह छे तो अपरिचयथी अंजाइगएल चक्षुए अनुगमन ए मूर्खता छे. स्वतन्त्र पृथक्करण-विवेचन हीन अनुकरण ए अल्पतानी क्षुद्रतानी निशानी छे. महत्ता विविध तत्वोनां मथनथी कोइ स्वतन्त्र अमर तत्वज नीपजावी कहाडे छे. एक देशमां एक परिस्थितिमां अमुक जातना वलणवाळी एक प्रजमां जे इष्ट लागतुं होय ते अन्यस्थळे विनाशक होय. परन्तु अंजाई गयेली दृष्टि अक्षरे अक्षरनुं अने दोषे दोपनुं अनुकरण करे छे. अने एम पोते हंस मानेलाओनुं गति-लालित्य प्राप्त करवा जतां पोते काकोचित मानेल स्वाभाविक कार्य पद्धतिनो अने साथे पोतानो पण पंडितमन्यतामां विध्वंस करी नाखे छे. स्वतन्त्रता शुं छे, ऐक्य शुं छे, ते एक वखते हिन्द सम्पूर्ण समजतुं हतुं अने ते समये रोमन महाराज्य प्रमाणे तेनां वर्तन अने विचारो जूदां न हतां. सामान्य सिद्धान्तो तेना जीवनना तेना अहर्निश वहतां व्यवहार चक्रना प्रेरक अने नियामक बळ रुप हता. जेटले अंशे लेखमां सामाजीक स्थिति व्यक्त करवानी शक्ति होइ शके तेटले अंशे प्राचीन ग्रन्थोमांथी आ प्रतिबिम्बित थतुं देखाय छे. प्रवृत्ति अने निवृत्तिना ख्याल ए वखते कंइ जूदाज हता. बहिर्नैष्क्रियता अने आलस ए बे एक वस्तु न हतां. आर्थिक बाह्य उन्नति ए मनु-

ष्यनुं अन्तिम साध्य न हतुं परन्तु आत्मोन्नति अर्थे आवश्यक चित्त स्वास्थ्यनुं–शान्तिनुं साधन हतुं. मानवनुं सुख तेना साधनोनी संख्याथी नहि परन्तु तेओनी सन्तोष जनक शक्तिथी–प्राप्त सन्तोषथी मपातुं. स्वतन्त्रता ए केवळ बाह्यज नहि परन्तु साथे आन्तर बन्धनोने आन्तर जुल्म गुजारनार सत्वोने पराधीन तामाथी मुक्ति हती. ऐक्य ए सहभोजन के व्यात्किक अथवा मंडळनी विशेषताना अभावमां सम्पूर्ण न थतुं. आत्माना ऐक्यनुं भान भूत दया अने व्यापक सहानुभूति ए तेनां आन्तर तत्त्वो हतां. समान धनिकता समान कीर्ति समान शक्ति समान अधिकार के एवी कोइ समानता तेओनां मंडलनी परिच्छेदक न हती. तेओनी समग्र प्रवृत्तिना अन्तिम हेतुओ तेमनां यज्ञमय जीवनव्रतो ए तेमना व्यतिरेकी गुणो हता. निवृत्ति ए व्यर्थ शक्तिव्ययमांथी हती. प्रवृत्ति ए दृष्य गतिना अविराममां के त्वरिततामां नहि परन्तु उत्कृष्ट विमलसाध्यना साधनमांज समग्र शक्तिने योजवामां हती. भास नहि परन्तु तत्वज ग्राह्य हतुं. आजना जमानानी दृष्टि कंई जूदीज छे. आमाना घणा खरा सिद्धान्तोने शब्दोमां पाश्चिमात्य पंडितो मान्य राखशे अने उपदेशशे परन्तु तेमना हृदयनां गूढ स्थानोमां के तेओनां वर्तन व्यवहारनां अगत्यमां तत्वोनां सामान्यतः तेने माटे स्थान नथी. जड अर्थ अने शरीरिक सामर्थ्यनी उपासनामां पश्चिम अत्यारे तल्लीन छे. एक मृगजल पाछळ अत्यारे यरप अने अमेरीका दोड्यां जाय छे. अने

ए तेमनी त्वरित प्रगति तेमनो महान् प्रयत्न तेओनी गर्वीष्ट अने साशंक सासूय हरिफाई ए सर्वेनो अन्त हवे दृष्टि मर्यादानी बहार होय एम नथी लागतुं. अमेरीका तेनी हृदयहीन स्वातन्त्र्यनीतिनां विषमय परिणामोथी हवे बहु दूर नथी. यरप तेनी प्रजाओनी हरीफाइनां फळनी भय अने आतुरताथी राह जुए छे. आ सर्व शंकामय स्थितिनुं अनतिव्यक्त परिणाम जोइ शकाय छे. अहिं तेनो उल्लेख करवो मने अनावश्यक अने अस्थाने लागे छे. पाश्चिमात्य वस्तुस्थितिथी त्यांना सिद्धान्तोनी अनुभवथी सिद्धथती असरथी अहिनो मोटो भाग तद्दन अजाण्योज होय छे अने तेथी बाह्य रुप रंगथी आकर्षाइ ए उपयोगभ्रष्ट नीतिने उन्नतिनुं साधन-मानी अवलम्बे छे. परभाषा द्वारा ज्ञान आपवानी पद्धति जेम केवळ शक्तिना व्यर्थ विनाशमां परिणमे छे तेम पाश्चिमात्य विचारनुं स्वतन्त्रविचारहीन अने हिन्दना तत्वोहीन शिक्षण आपणां प्राप्त शुभनो ध्वंस करे अने आपणने नवीनताथी आडे रस्ते आकर्षी जांय ए सम्भवित छे. माटे ज्ञानवाहिनी भाषामां जेम फेर करवो आवश्यक छे तेमज ज्ञाननी शुद्धतानुं पण सूक्ष्म अवलोकन कर्या पछीज तेने अपरिपक्व चित्तना हाथमां मूकवुं ए डहापण भर्युं छे. दरेक चित्तमां जेम स्वतन्त्र विवेक शक्ति होय छे तेम दरेक बुद्धिमां अपूर्णता अने आडे रस्ते दोराई जाय तेवी अशक्ति अने आत्मबळनो थोडे के घणे अंशे अभाव पण होय छे. तेथी कोइ पण विचार कोई बुद्धिनी स्वतन्त्र विवेक शक्तिने अधीन करवा पहेलां

तेनुं निरीक्षण करवानां विविध दृष्टिबिन्दुओ तेने प्राप्त कराववां जोइए. कोईपण वात कोईपण चित्त सिद्ध मानीबेसे ते पहेलां तेनी मान्यता जेम बने तेम ओछी भूलपात्र थाय ते माटे विचारमां सत्यसूचक बने तेटलां तत्त्वो तेनी दृष्टि समक्ष रजु करवां जोइए. बने तेटली दलीलो दृष्टान्तो अने पुरावाओ हाजर कर्या पछीज न्यायाधीशनी बुद्धिने चुकादो आपवानो अवसर आपवो जोइए. पूर्व अने पश्चिमनुं—हृदय अने बुद्धिनुं—चैतन्य अने जडतानुं—निसर्ग अने उपाधिनुं सहयोजन ए माटे घणुं उपयोगी छे.

हुं सूक्ष्म अभ्यासक नथी. भूतकाळनी वस्तुस्थिति मने सम्पूर्ण व्यक्त नथी; परन्तु बाह्य दर्शन अने आन्तर तत्त्वनुं सेळभेळ—स्पष्ट विवेकनो अभाव, जे पश्चिममां केवळ महत्तम तत्त्ववेत्ताओनां वाक्योमांज अदृष्य जेवो जणाय छे अने जे पश्चिमना सर्व कालना अने पूर्वना आधुनिक सामान्य विद्वान् वर्गना विचारोने कलुषित करतो देखाय छे ते हिन्दना प्राचीन साहित्यमां बहुज ओछा प्रमाणमां रहेलो छे. पश्चिममां जे असाधारण विद्वानोनीज दृष्टिने गोचर थई शक्युं छे, तेने स्पष्ट जोई शकवा अने विचारथी प्रयत्न पूर्वक नहि परन्तु हृदय उपरनी तेनी तलस्पर्शी असरथी अनायासे स्वाभाविक रीतेज जीवनव्यवहारमां तेनुं प्रतिबिम्ब पाडवा पूर्वनां चित्तो दंभहीन विचार वाणि अने वर्तनना ऐक्यथी समर्थ थयां छे. ए तेमनुं तत्त्वज्ञान, तेमनी आन्तर उन्नति अने भौतिक अवनतिनुं कारणभूत थयुं छे, एम प्राचीन लेख अने

वर्तमान भारतीय सामान्य चित्तनुं निरीक्षण सूचवे छे. मानवनी उन्नति ए तेनी आन्तर उन्नति छे. आर्थिक उन्नतिना उन्नततम शृंगपर विराजित अमेरीकन चित्तनी आन्तर अशान्ति वर्तमान अने भविष्य माटे ए सिद्ध करवा मथे छे. सुख ए अर्थना समूहमां नहि परन्तु जडने तेना गुणने सार्थकता आपनार तेना भोक्ताना सन्तोषमांज छे. अर्थनी अर्थता तेनी जडतामां के तेना गुणोमां नहि परन्तु चैतन्यचित्तनी भोगाभिलाषामां अर्थीतामां छे. अर्थी जडताने अर्थ बनावे छे. हृदयनो सन्तोष ए समग्र प्रवृत्तिनुं–समग्र प्रयत्ननुं–कार्यनुं नियामक बिन्दु छे. अनुभवथी उत्तरोत्तर विमलतर थती जती अभिलाषाओ शुभतर–वधारे आनन्दजनक पदार्थो तरफ प्रेराय छे अने एम उंचां जतां चित्तमांथी क्षुद्र नीच वासनाओ स्वाभाविक रीतेज निःशब्द अदृश्य थइ जाय छे. इच्छानी ए प्रगति दृश्य अर्थसमूहथी विरुद्ध छे. अर्थ समूहनी शक्ति देह साथे सम्बद्ध छे अने चैतन्यना देह साथेना सबन्धथीज तेनी इच्छाने आकर्षी शके छे. परन्तु सन्तोषनी–आनन्दनी–शान्तिनी–निरंकुश स्वतन्त्रतानी–व्यक्त ज्ञाननी–सम्पूर्णतानी पिपासा ए चैतन्य तत्त्वनो धर्म छे. नित्यनी ए सूक्ष्म पिपासा, नित्यसूक्ष्मतत्त्वोथीज शमी शके छे. ए गूढ तृषा भूत अने वर्तमानना सर्व प्रयत्नोनी प्रेरक छे. अने भावीमां पण एज सूक्ष्म आकांक्षा–एज हृदयकाम मानवचित्तनां सर्व तरफडीआंनो अने प्रयत्नोनो मूळभूत रहेशे. प्रवृत्तिनो प्रेरक अर्थ नहि परन्तु

सन्तोष छे. ए सन्तोष शामां छे तेनुं अज्ञान अने तेना स्थाननी विविध कल्पनाओ—मान्यताओ मानवचित्तमां विविध अर्थकामनाओ उत्पन्न करे छे अने विविध दिशामां प्रयत्नने प्रेरे छे. कोई पारदर्शी भाग्यशाली बुद्धिने तत्त्वदर्शक टुंका सरल सर्वदेशीय सर्वकालीय प्रयोगो अने दृढ अनुमानशृंखला अनायासे मळी जाय छे अने आ अनंत गीच अर्थअरण्यमां सूक्ष्म तत्त्वकेडी सम्भावित करे छे. ए केडी हिन्दने मळी हती अने वृक्षे वृक्षे भटकवुं मूकी दई हिन्दे अनन्य परायण बनी ते मार्गे विचरवुं शरु कर्युं. ते समय एवो हतो के ज्यारे अरण्य उपद्रवशून्य हतुं. जंगली प्राणीओनो तेमां निवास न हतो तेम वृक्षोमां ममत्व बांधी ते वृक्षोनी पासेथी पसार थनारा निःस्पृह पथिकोने पण शंका भय के ईर्षाथी के कंइ प्राप्त करवाना लोभथी शाखाओवती प्रहार करनारा लुंटारा वृक्षपतिओ नहता. परन्तु ज्यारथी एमनो अधिकार शरु थयो त्यारथी अनेक निःस्पृह निष्प्रतिकार अरक्षित पथिकोनां शबो ए केडीने रोकवा लाग्यां अने आम वृक्षोने छोडी सीधी केडीए जवामां वृक्षपतिओथी तेओनो अभिभव थयो. समय जतां व्यक्तिनी प्रबलतरताना जुल्मने अंकुशित करवा उत्पन्न थएल समूहशक्ति समूहनो स्वार्थ साधवामां योजावा लागी. नानां नानां मंडळोमां परस्पर स्वार्थविरोध अने अन्याय्यअतिक्रमण शरु थयां. सर्वमान्य वीरनरोथी रक्षाएलां मंडलो निश्चिन्त बेदरकारीथी प्रबल शासकनां शासित बन्यां; सेवा अने लोकप्रिय गौरवनुं स्थान

सत्ता अने प्रभुत्व लीधुं; अने एम योजक समूह प्रजारुप मिलकत रुप बनी गयो अने रक्षकनां सेवागौरवनुं स्थान स्वामीना स्वामीत्वअभिमाने लीधुं. रक्षण ए समाजनुं नहि परन्तु प्रजानुं-पोतानी मिलकतनुं बनी गयुं. समाजसुखना विचारने शासक स्वार्थे पदभ्रष्ट कर्यो. आम भिन्न भिन्न स्वार्थ वाळा अनेक स्वामीओ उत्पन्न थया अने तेमना परस्परना विरोधने अंगे समाजनी शान्ति छिन्न भिन्न बनी गइ. पहेलां मानव व्यक्तिनी स्वच्छन्दताना आघातथी जेम क्लेश तनखा प्रकटता हता तेम हवे वृक्ष समूहोनां संघर्षणोथी महान् दावानल सामाजीक अरण्यने—सर्वशान्तिने भस्मसात् करवा लाग्यो. विरुद्ध शक्तिओनी समानप्रायता निरन्तर युद्धने उत्पन्न करनारी छे. विश्वमां स्वार्थ अने न्यायने सर्वदा विरोधज चाल्यो आवे छे. ज्यारे ज्यारे विरुद्ध स्वार्थशक्तिओ समान होय छे अने तेमने नियममां राखनार कोइ उपरी न्यायप्रभुशक्ति होती नथी त्यारे कलह ए आवश्यक परिणाम छे. मानव व्यक्तिओनी समानता अने नियामक बळना अभावे, व्यक्तिसमूहने जन्म आप्यो. व्यक्तिओनां स्वार्थ बळने अंकुशित करवा समूहन्यायशक्तिनुं अवलम्बन करायुं. आम व्यक्तिस्वार्थ—अन्यायता मृतप्राय बनी. परन्तु समान मंडलोना उद्भवथी अने सर्व मंडलोने नियममां राखे एवी महा सत्ताना अभावथी पुनः ए क्लेशस्थिति प्राप्त थइ. महाराज्यनां बंधारणे पुनः तेनो [illegible] कार कर्यो. वर्तमान युद्धोनुं—मानव विध्वंसोनुं कारण

प्रजाकीय स्वार्थ शक्तिनी समानप्रायता छे. अलबत् विविध स्वार्थ शक्तिनी समानता निसर्गथी हानीकर नथी. एक स्वार्थ शक्ति बीजी स्वार्थ शक्तिथी प्रबलतर होय तेमां अबळपर जुल्मज वर्ते छे. परन्तु ए समान शक्तिओने लाभनी आशाए के हानीना भये अन्याय अतिक्रमणथी न्याय अने सामाजीक सुखशान्तिनो ध्वंस करती अटकाववा कोई प्रभु नियामक शक्तिनी आवश्यकता छे. जेम व्यक्ति स्वार्थने न्यायना अंकुशमां राखवा व्यक्ति समूह शक्ति प्रभवे छे तेम प्रजा स्वार्थने अन्याय्य अतिक्रमणमांथी अटकाववा प्रजा समूहनुं बन्धारण अने तेमनी संयुक्त नियामक न्याय शक्तिनुं चैतन्यमय तेमज मूर्त सामर्थ्य आवश्यक लागे छे. अन्याय युद्ध अने व्यर्थ विध्वंसनो एज प्रतिकार छे. व्यापक प्राय ब्रिटिश साम्राज्यना छत्र नीचे हिन्दमां आन्तर कलहनो अभाव छे अने तेथी आन्तर उन्नति साधवानो शुभ समय आपणने पुनः प्राप्त थयो छे. प्राचीन समयमां हिन्दना भिन्नभिन्न प्रान्तोना विग्रहोथी अने सीकंदर आदिना अतिक्रमणथी हिन्द शारीरिक आघातोथी अशान्त वेदना अनुभवतुं हतुं. तत्त्वज्ञानमां—आन्तर दिव्यतामां—सुखनां आनन्दनां विमल अमृतमय तत्त्वोमां जामी गएल स्नेह—दृढ जडाइ गएल हृदय भावनाओ ए दुःखना अनुभवमां पण अखंड रही. योगी चित्तने समाधिमांथी जगाडवा जड दुःखो असमर्थ निवड्यां. परन्तु प्रगति—तत्त्वप्राप्तिनो मार्ग रुंधाइ गयो. परमसुख माटेनी हृदयतृषानुं तिरोधान न थयुं परन्तु ए अनन्त आनन्द अब्धि

अने तृषित हृदय वच्चे जड देहनां अविरत दुःखोए आन्तर व्यग्रतानो महान् दुर्ग उत्पन्न कर्यो अने शान्त विचार चैतन्यनो ह्रास करी हताशनां तरफडीआंने जन्म आप्यो. छतां स्नेह-लग्न दृष्टि साध्यने चोंटी रही. गति निरुद्ध थतां पण दृष्टि, निरोधक तरफ न फरी अने अतिप्रेम ए आघातनां कारण अने निवारणनो विचार करवा जेटलुं पण चित्तने पाछुं वाळी शक्यो नहि. द्वार खुल्लुं होवा छतां प्रकाश अने हवाना लोभे मांखी बारीना काचमां वारंवार अथडावा लागी. सळगतां घरना धूम्रपूर्ण ओरडामांथी भागतां एकनी एक भींतमां वारंवार माथुं जोरथी अथडावा लाग्युं अने छतां अतिप्रेम—अतिआतुरता—अतिभय—अतिव्याकुलता ए आघातने समजवा--विचारवा समर्थ न थयां. विद्वत्ता अने सहृदयतानुं अभिमान राखनार विश्वमां भले असंख्य महामन्यो हो. परन्तु जेमां असरने पात्र हृदय छे--बुद्धि छे ते हृदयोने जन्म अने मरणनां गूढ तत्त्वो विह्वल उन्मत्त कर्या विना कदी रहेतां नथी. अनुमानने विफल बनावतुं अदृश्य चैतन्य तत्त्व—बुद्धि अने हृदयनां अगम तत्त्वो-जडमां एवां अ-जड परमाणुओनो आविर्भाव-देह अने जीवनो संयोग अने वियोग-आ सर्व शुं छे? शुं स्नेही परिचितनुं अवसान शुं तेना देहमांथी तेनो लोप—तेना देहनो थतो लय जोवानी—जोइ शकवानी आपणी कठोरता-पुनः कदी मळी शकवानी के जोइ शकवानी के हृदयनी उंडी अव्यक्त भावनाओ विना कोइपण रीते अनुभवी शकवानी

अशक्ति–कोइ अलौकिक जुल्मने आपणी पराधीनता-आ शुं कोइ पण कोमल हृदयने जीवनपर्यन्त उन्मत्त मूढ बनावी न दे? शुं आवां महान् तत्त्वोनुं अज्ञान आपणी जीज्ञासाने उग्र पिपासा दाहथी सळगावी न मूके? शुं आपणां हृदय अने बुद्धिने उग्र सन्निपातमां मत्त तरफडीआं न मरावे? शुं आपणने विश्वमाटे–आ महान् देखाता तुच्छ अर्थोनी उपासना विचार के ज्ञान माटे अयोग्य बनावी न मूके? सहन शक्ति अने डहापणनी बडाई मारनाराओ भले गमे तेम कहे. ज्यां हृदयनी तल्लीनता छे ज्यां चित्तनी अनन्य परता छे त्यां दुनीआनुं सर्व डहापण अदृश्य थइ जाय छे. धैर्य, सहनशक्ति, विचारशीलता ए मात्र सरखा-मणीना शब्दो छे. ज्यां स्नेह–काम विभक्त होय छे, ज्यां अनेक अर्थोनी उपासना थाय छे, ज्यां जीह्वा सर्व मिष्ट पदार्थो देखतां पाणी पाणी थवा मांडे छे, ज्यां वासना ए केवळ दृष्टिलोल्य होय छे, त्यां एक अर्थनो विध्वंस धैर्यथी सही शकाय छे. अन्य अर्थनी उपासना ए डहापण लेखाय छे. तेओनो काम ते काम नथी–अब्धिनो हृदय क्षोभ नथी परन्तु सपाटीपरना क्षुल्लक तरंगोज छे. तेमनो जन्म अने नाश उभय व्यर्थज छे. आपणा पूर्वजोमां कंई पण दोषपात्र हतुं–आपणी आर्थिक अवनतिना साधन रुप बनवाथी जो कंइ अनिष्ठ हतुं तो ते तेमनुं तत्त्वनुं स्पष्ट दर्शन हृदयनो उग्र प्रेम अने अनन्य परायणता हतां. तेमनी ऐहिक अपूर्णता–तेमनो आर्थिक विघ्नोथी पराभव ए सर्व तेमनुं सद्दुथी महान् तत्त्व हतुं–तेमनां हृदय गौरवनुं विजयकेतुरुप हतुं. पार्थि-

मात्र पूर्णता अने विविधतानी श्लाघा करनार हिन्द तारी पोतानी आन्तर महत्ता जो. भूतकालमां जे त्हारा अंगे अंगमां प्रसरेलुं हतुं ते हजु पण नष्ट नथी थयुं. गूढ हृदयोमां हजु पण ते धबके छे परन्तु त्हारा मगज अने हृदय वच्चे संबन्धज क्यां छे. हृदय अने मगजना संधानथीज जे मनुष्यने ज्ञानमय जीवन अर्पे छे ते ज्ञान तन्तुनो ध्वंस थयो छे अने अंशांशनी कल्पना करनार वैद्यो ए महान् व्याधिनुं निदान करवा--अरे तेनु अस्तित्व पण जाणवा असमर्थ थया छे; अथवा उघाडी आंखे तारा जड दुःख-मय श्वासोच्छ्वासने अविछिन्न राखी त्हने शबवत् निश्चेष्ट निर्ज्ञान निर्भाव पडयुं रहेवा दे छे-राखे छे. हिन्द बाळको जागो. मृतप्राय मातानी आ दशा जोतां स्वस्थ बेसी न रहो. एना रुधिरथी पोषाएलाओ त्हमारामां जो हृदय होय तो त्हमारी कीर्तिनो त्हमारा धर्मनो विचार करी त्हमारी माता प्रत्येनी फरज बजावो. समजो के तेना जीवनमां त्हमारुं जीवन छे. ते त्हमारी केवळ जननीज नथी परन्तु त्हमारां जीवनने पोषनारी निभावनारी अमृत सरिता छे. एनां अमरतत्त्वने उडीजवा न दो. जड देहमां डुचा भरी तेनी सेवा करवानुं काम पश्चिमने सोंपो. चैतन्य आत्मानेज तत्त्व माननार भारत बालो त्हमारी माताना आत्मानी सेवा करी त्हमारुं पुत्रत्व सार्थक करो. हिन्दनां हृदय अने मगजने जोडनार छिन्न ज्ञान तन्तुने पाछुं सांधो. त्हमारी माताने त्हमारी माता बनावो अने तेनी मायाळुताथी, तेनां अनहद वात्सल्यथी, तेनी ममताभीनी

स्नेह दृष्टिथी, आपणी उन्नतिथी तेने थता हृदयानन्दथी, तेनी अमोघ अन्तर आशीषथी, ·तकृत्य—धन्यधन्य थाओ. अस्तु. हिन्द अने पश्चिमनो मारा हृदयमां अहोनिश रम्या करतो एक महान् भेद बतावबा माराथी आ लखाइ गयुं. हिन्दनी मन्दता, तेनी अराजकीय बुद्धि, तेनी व्यवहारमां अकुशळता, तेनी जडता, अने एवा बीजा अनेक आक्षेपो ज्यारे ज्यारे विदेशीओ तेमज विदशी-स्वदेशीओना मुखथी मारे काने पडे छे त्यारे मारुं हृदय कंपी उठे छे, विह्वल बनी जाय छे. शुं हिन्द निन्दा माटेज सरजायेलुं छे? शुं तेनी अलौकिक महत्ता मात्र मूर्खतामांज खपवानी छे? शुं तेनां बाळको पण तेनी निन्दामांज पोतानी महत्ता माने छे अंग्रेजी भाषाना उपसको अंग्रेजीनां बांगां भलें फुंकया करे. जो तेओने स्वतन्त्र कान होय तो कहे के शुं ए भाषामां रुक्षता—निरसता नथी लागती? शुं हृदनां कोमल तेमज भव्य तत्त्वोनो तेमां अरण्यअभाव नथी जणातो? शुं तेनुं शब्द के वाक्य-रचना बाहुल्य के तेनो विस्तार तेमां कोईपण रीते भाषा तरीखेनी पात्रता भरे छे? तेना लेखकोनुं महत्व ए तेनुं पोतानुं नैसर्गिक महत्व नथी. भाषा अने विचार एवीरीते जोडा-एलां छे के तेमनी स्वतन्त्र मधुरता गाम्भीर्य महत्ताने जुदां पाडवां ચणाIEIR बहु मुश्कील थई पडे छे. इन्ग्लिशमां आ स्पष्ट जोइ शकाय छे. संस्कृत हिन्दी पर्य्यन तमारी अलौकिकता माटे कयुं हृदय तमने नमन कर्या विना रहेशे? शुं संस्कृतनी, बुद्धिने सम्पूर्ण

संतापना मित स्पष्ट सबल सरलता—हृदयने ध्रुजावी रसमस्त बनाव-नार भाववाहि गूढ ूचकता तेमां छे ? शुं ध्वनिना प्रतिनिधि तेमना मूळाक्षरोमां ध्वनिनां ूळतत्त्वोनुं लेशपण ज्ञान जोवामां आवे छे ? शुं तेमनां वांचनमां दृष्टि अने वाणि विभक्त नथी थतां ? शुं मुर्ख असरलता विना एने बीजुं नाम आपी शकाय तेम छे ? लाखो पानां भरनाराओ पोताना विस्तारथी भले मगरुब बने. हिन्दने माटे ध्वनि के अक्षरनी कीमत मात्र प्रतिनिधि तरीकेज छे. गजरामारु अने गुलबंकावळी जेवी करोडो वार्ताओ लखाय अने तेनी लाईब्रेरीओ भराय ते भले पुस्तक वेचनाराओने माटे इष्ट हो. हिन्दनी—टुंका मानव जीवननी तीव्र जीज्ञासा, मिततामां सार—तत्त्व ज्ञानामृतनी उपासना करे छे. विद्यानी सार्थकता याद-दास्तमां, पंडितताना दर्शनमां, सभाओना विजयमां, अभिमानमां नथी. सुवर्ण भारने वहनार रासभ शिरोमणिओ विश्वमां थोडा नथी. परन्तु हृदयमां जे कोइ अखंड पिपासा बळ्या करे छे जे अविरत असन्तोष आपणने कोइ अव्यक्त दिव्यता तरफ सस्पृह सआश आकर्षे छे तेना शमनमां तेना सन्तोषमां छे. आपणा असंख्य बन्धुओनां जीवन विशाल अगाधनी उपासनमां नष्ट थई गयां अने थाय छे परन्तु मृगजलनी पाछळ दोडतांज. जीवन तत्त्वनी एक अंजलिपण ए महासमुद्र करतां हिन्दने हजार दरज्जे इष्टतर छे.

आपणी कुटुम्ब पद्धतिनी निन्दा स्थळे स्थळे थाय छे. आपणा मदोन्मत्त जुवानीआओ विहृदय स्वतन्त्रता अने पिता-

मातानी अनाथतामां उन्नति माने छे. तेओनी अन्ध दृष्टिने गाढ रात्रि ए महान् सूर्य प्रकाश जणाय छे. माता पिताने तिरस्कारनाराओ दोडो–तमाराथी दोडाय तेटलुं दोडो. तमारी पाछळपण जरा अने अशक्ति दोड्यां आवे छे. तमने विधाताशक्ति दीर्घ आयुष्य अर्पो अने तमारां बाळकोनी तमारा जेवीज बल्के तमाराथी पण विशेष उन्नतिनो प्रत्यक्ष अनुभव करावो. तमे दुःखी थाओ ए अमने इष्ट नथी परन्तु वृद्ध कोमळ पूज्य भोळां वत्सल आशीषमात्र देवानी वृत्तिवाळां भेदातां हृदयनां दुःख असह्य छे अने क्षणवार तमारी मूर्खता तरफनी दया अने सहानुभूतिने हठावी मूके छे. इष्टतो एज छे के परम करुणतत्त्व तमारां पाषाण हृदयोमां कंइक कोमळतानो अंश मूके अने पुत्रमय जीवनवाळां बीचारां घेलां माबापोनां हृदयमां संन्तोषनी अमृतधारा सींचे. तमारी विद्याना के धनना अभिमानथी छकी गएलाओ समजो के तमारां सर्व महत्वो करतां भोळां हृदयोनुं वात्सल्यगौरव हजारो गणुं वधारे छे. तेओनी विमलता आगळ तमारी क्षुल्लकता तेमनी अने तमारी वच्चे राजहंस अने बगलाओनो भेद उत्पन्न करे छे. यरपनी मोहिनीथी मोहित थयेलाओ तमे हंस मटी काक थवा केम जाओ छो. परस्पर सहाय ए ज्यारे समाजनो सर्वथी महान् अचल सिद्धान्त छे त्यारे उत्पादकनो–पोषकनो–उन्नतिना प्रेरक अने सहायकनो–निःस्वार्थ स्नेहनो–त्हमारा अस्तित्वनां कारणनो–त्हमारां जीवननां चैतन्यदातानो अनाथतामां त्याग करतां तमने

अरम केम नथी आवती? ज्यारे पश्चिममां (Cooperation) संयुक्त प्रयत्न अने परस्पर सहायना सिद्धान्तो मंडलो बांधे छे त्यारे तमे कुटुम्ब मंडळोनां सहृदय बन्धारणोने शामाटे तोडी नाखवा प्रवृत्त थाओ छो? तमारुं चटका भरतुं युवान् लोही क्षणवार आश्रयनी अपेक्षा विना अडग आगळ वधवा विजयवन्त थशे. परन्तु समय अने परिस्थितिनी विचलता केम भूली जाओ छो? तमारी अपूर्णता पण कोइ गूढ समयचक्रने अधीन छे. तमारी उच्चस्थिति निभाववामाटे कोइ गेरेन्टी नथी. तमारी कुटुम्ब पद्धति जे अत्यारे तमने भाररुप—तमारी उन्नतिमां बाधकर लागे छे ते, ते वखते तमारा आधाररुप—तमारा जीवनना अवलम्बन रुप लागशे. पिताहीन बाळको कुटुम्ब विना कइ दशाने पात्र थाय ए विचारवा जेवुं छे.

हिन्द चेतनहीन के मूढ नथी परन्तु ध्यानस्थ छे. तेनी ए स्थिति तेना शरीरने निश्चेष्ट पराधीन बनावे छे. परन्तु काष्टप्राय ए देहमां योगीनो महान् आत्मा प्रकाशे छे ए कोण जोई शके? तेनी अन्तर्मुख दृष्टि क्षणवार बहार आवतांनी साथेज तेनी परिस्थिति तेनी इच्छाने अनुकूल बनी जशे. हिन्दमां आर्थिक उन्नति साधवानुं सामर्थ्य नथी तेम नथी परन्तु तेनी खरी इच्छाज हजु तेनां अर्ध ध्यान मस्तचित्तमां पूर्ण उद्भवी नथी. आ वात तेनां नेत्रोना इषद् विकासथी नहि परन्तु ते नेत्रोमां देखातां अर्धघेनना चिन्होथी अने तेना अन्तरमां रमतां एकान्त मधुर स्वप्नोथी

जोइ शकाय छे. ए शरीर बहिर्विनाशथी नष्ट थई जाय ते पहेलां तेमांनी मनोवृत्तिने जगाडी जड परिस्थिति तरफ वाळवी ए [illegible] छे. आजमानानी मानसिक उन्नति नहि परन्तु तेनी जडताज हिन्दने खामी भर्युं देखाडे छे. खरी प्रगतिनी मन्दता नहि परन्तु नवां उत्पन्न थतां जड आक्रमणो तेना पोताना बळने आन्तर प्रगतिमांथी अमुक अंशे पाछुं खेंची जड रक्षणमां प्रेरवानी जरूर पाडे छे. हुं मूळ वस्तुथी आम दूरने दूरज खसतो जतो होऊ एवुं लागे छे परन्तु हिन्दनां तत्त्वनो ध्वंस हिन्दनेज नहि परन्तु समग्र मानव जातिने एक महान् प्राप्त कोषना विलय जेवो छे ए विचारथी प्रेराई आटलुं कह्युं छे. पश्चिमना मोहमां–तेनुं ज्ञान प्राप्त करवामां हिन्दना हिन्दत्वनो–तेनां नैसर्गिक गौरवनो नाश न थाय ए ध्यानमां राखवा जवुं छे. ए वात विचारकोनी दृष्टि समक्ष मूकवा आ अल्प विस्तार आवश्यक जणायो छे.

समग्र विश्वमां विचारनु चक्र चाले छे. क्षणवार मानव समाज बहारना उपद्रवो दूर करवा जड विश्वमां अनेक जड प्रयत्नो करतो देखाय छे. बाह्य परिस्थितिनी अनुकूलता प्राप्त थतां चित्त आन्तर प्रगति तरफ वळे छे. अने तेना मोहमां धीमे धीमे बहारनुं ध्यान ओछुं थतुं जाय छे. आम अरक्षित बहारना प्रदेशमां पुनः स्वार्थ शत्रुओ उभा थाय छे अने ध्यानमग्नचित्तने पुनः बहिर्मुख थवानी फरज पाडे छे. शान्ति ए मनुष्यना हृदयनी इच्छा छे. ते शान्ति मेळववा जनसमाज अशान्त प्रगतिथी मथे

छे; अने ए शान्ति मळी लागतां-तेने अनुभववा-तेनो ल्हावो लेवामां तेनुं रक्षण करवुं भूली तेने खुवे छे. आ बन्ने वातने ध्यानमां राखी बांधेली पद्धतिज सर्वदा इष्ट थवा सम्भव छे. विचार चक्रनो विचार करतां मने एक महान् सामाजीक तत्त्वनो विचार साथेज आवे छे. लग्न ए आ बुद्धिना जमानाने अगम विषय छे केम के तेमनी दृष्टि एकज छे. हृदयचक्षु तेमने छेज नहि. मनुष्यना हृदयमां-तेनां निसर्गमां ममतानां-स्नेहनां तत्त्वो उंडां मूळ नाखीने रहेलां छे. आपणुं सामाजीक बन्धारण केवळ विरोधी स्वार्थना-अन्यायना प्रतिकारनेज नहि परन्तु साथे आपणा स्वाभाविक कोमळ भावोने पण अधीन छे. मनुष्योमांज नहि परन्तु पशुओमां पण ए स्पष्ट देखाय छे. कुटुम्बनी उत्पत्ति ए ममतामांथी छे. पशुओमां पण कुटुम्ब जेवुं कंइक होय छे. पक्षिओमां पण जोडांओ होय छे. तेओपण कंइ तदन भिन्नभिन्न आकर्षणहीन असम्बद्ध परमाणुओ जेवां नथी. स्त्रीपुरुषना सम्बन्धमां कंइक नैसर्गिक आकर्षण प्रथम परिचय उपजावे छे. अने धीमे धीमे वधती जती ममता, सद्गुणोना-प्रतिप्रणयना अनुभवथी वधती जती माननी-स्नेहनी लागणी, धीमे धीमे हृदय लग्ननुं-आत्माना ऐक्यनुं रुप धारण करे छे अने तेमनो सम्बन्ध पवित्र-धर्ममय बनी जाय छे. बे हृदयनां मधुर स्नेहतत्त्वोनुं मूर्त संयोजन, निष्कपट आनन्दमय कोमळ बाळकमां परिणमे छे. पोताना प्रतिबिंबने-पोतानां मनुष्यत्वने-पोताना दम्पतिस्नेहनां मधुर फळने-त्रीजा आत्माने

जोइ हृदयमां स्वाभाविक रीतेज स्नेहोर्मिओ उछळी रहे छे अने एम कुटुम्बजाळ गुंथाय छे. पूर्ण स्वतन्त्रता अने नीतिना सिद्धान्तोना अभावमां आम हृदयनुं साम्राज्य प्रसरे छे. परन्तु धीमे धीमे ए स्वतन्त्रता रूढीनुं रूप ले छे. घणा समय पछी ते रूढीनुं उत्पादक नैसर्गिक कारण अदृष्य थई जाय अने ए रूढी आनन्दमय स्वतन्त्रताने बदले क्लेशमय सामाजीक बन्धनोने पराधीनता रूप लागे छे. पुनः पशुओमां पण नथी एवी पाशव विहृदय व्यक्तितानो उपदेश करनाराओ जागे छे अने नैतिक स्वातन्त्र्यने बाने पोतानी लेशपण अंकुशनी असहिष्णु उछळती पशुवासनाओने सर्व सम्भवित अतिक्रमणोथी तृप्त करवानो मार्ग खुल्लो करवा मथे छे. सर्व परमाणुओ आम पुनः जूदे जूदां थई जाय छे अने ज्यारे तेमनी निरुद्ध वासनाओना छूटा थएला घोडाओ खूब दोडी दोडीने थाकी जाय छे, ज्यारे नवी प्राप्त करेल स्वतन्त्रतानां खरां तत्त्वो समजाय छे, ए असम्बद्धता मानव स्वभावथी विरुद्ध छे एम भान थवा मांडे छे त्यारे पाछुं हृदय पोतानो प्रभाव देखाडे छे अने पुनः ए दिव्य नैसर्गिक सुखसंस्थानो–आत्माऐक्यना अनुभवआलयनो–अलौकिक आन्तर सन्तोषनो–चैतन्यमय पवित्रतानो ल्हावो लेवानो आरम्भ थाय छे. पश्चिमनी प्रजाओ ए लग्ननो विध्वंस अने पुनरोद्धार अनिश्चित परन्तु अनतिदूर समयमां करी बतावशे. छतां ए नजीकता ए कार्यना प्रमाणमां समजवानी छे. आम हिन्द

आवां विचारचक्रना एक अमुक स्थळे छे अने यरप तथा अमेरीका बीजे स्थळे छे. जो ए चक्रनां मध्यबिन्दुपासे जई शकाय तो ते प्रयत्न करवो ए आपणुं कर्तव्य छे. अलबत्त चक्रनी टोचे देखातुं बिन्दु अभिमानथी भलें आपणो तिरस्कार करे परन्तु आपणी ध्रुवता आपणा चित्तने सन्तोषवा पूर्ण छे. आपणी स्थिति, उन्नति अवनति हीन मध्यबिन्दु आत्मामांज होय ए सर्वथी इष्ट छे.

धर्मनो प्रश्न पण अत्यारे घणो अगत्यनो छे. तेनुं पण चक्रज छे अने तेपर मानवचित्त फर्या करे छे. ममतानी पेठे धर्म ए पण मानवचित्तना निसर्गमां रहेलो छे, उपाधिरूप नथी. ए हृदयनी परम आनन्द तृषा छे. कल्पनानी नहि परन्तु अनुभवनी ए ऊर्मि छे. विभूतिनुं ए हृदय साम्राज्य छे. कुदरतनां तत्त्वोनी, तेना अनुभवमां थई जती तन्मयतानी, भव्य अने रमणीय तत्त्वोनी विभूतिथी व्यक्ति भान भूली कोई जड चैतन्य सर्वमां व्याप्त भासती परमआनन्द भावनानी, बुद्धिनी अविषय ए लोकोत्तर भावनाथी हृदयमां नित्य स्फुरती अखंड आनन्द अभिलाषानी ए उपासना छे. जड भासता विश्वमां अने जड चैतन्यरूप मानवमां विलसतां हृदयद्रावक विशुद्ध लोकोत्तर आनन्दमय तत्त्वो मानवना स्नेहभावने पराधीन वनावी दे छे अने विभूतिमत् श्रीमत् ऊर्जीतनुं नैसर्गिक यजन उपासन धर्मरूपे विश्वमां आवश्यक अधिकार भोगवे छे. अनन्त आगाध महोदधिमां हृदयनां तन्तुओने हलावी मूकी कोइ गूढ अलौकिक रसध्वनि जगाववानी कोमल शक्ति छे.

भव्य गगनचुम्बी महान् पर्वतोमां मानवीना चित्तपर अद्‌भूत छाप पाडवानुं सामर्थ्य छे. बुद्धिने स्पर्श कर्या विना कोइ उंडां कोमल स्थानोमां तलस्पर्श करी कोइ सुखी विह्वलता—कोइ आनन्द-मय उत्कंठा—कोई अव्यक्त रसाभिलाष जगाडनार विभूति—ऐश्वर्य ए भक्तिनी जनेता छे. जडविश्वथी पर अने तेना आत्मारूप तेनी सर्व शक्तिना मूळरूप कोइ आनन्दतत्त्व आम मानवचित्तमां अव्यक्त व्यक्त थाय छे. मानव हृदयनी विशुद्धतानां कोमळतानां महत्तानां बीजाओमां अने कोइ कोइ वार पोतामां दर्शन अने अनुभव करी मानवी मानव सम्पूर्णता—विमलता—गौरवनां उपासक बन्यां. मानवी अने अमानवी सर्वमां व्यापक आनन्द तत्त्वना भाने परम ईश्वर तत्वनां विचारने जन्म आप्यो. मृत्यु ए एक महान् गुरु छे. देह अने देहीचैतन्य—मूर्ति अने जीवनतत्त्वनो वियोग तेमना भेदमां विवेकमां निसर्गाधीन चित्तोने प्रेरे छे. बुद्धि अने हृदयनां तत्त्वो एवां छे के तेनुं नित्य भासतुं तिरोधान थवा छतां पण तेनो नाश-तेनो अभाव कल्पी शकातो नथी. जड तत्त्वोनां परमाणुओ जो अनश्वर छे तो नश्वर आकृति परिमाण परिच्छेद के कोइपण बलनी विनाशक असरनी अविषयता—शरीरनां विविध दशान्तरोमां—क्षीणता—पुष्टता—शक्ति—अशक्तिमां तेनी निर्बाधित स्थिति ए सर्व जोवा अनुभववा छतां तेनो नाश मानवो ए मानवचित्तने अस्वाभाविक लागे छे. मरणनी अविच्छिन्न परंपरा जोवा छतां कोइ कल्पना पोताना मृत्युनो—सम्पूर्ण अभावनो अनुभव करी शकती नथी. ए विषयमां कल्पना, मात्र पोताने—

चैतन्यतत्त्वने पोताना देहथी विभक्त अने देहने पराधीन शब स्थितिमां जोइ शके छे. परन्तु आत्मानो अभाव ए कल्पनामां पण अनुभवनो अविषय छे कारण के अनुभवमां अनुभवनारनुं अस्तित्वनुं भान होयज छे. आम चैतन्यतत्त्वनो ध्वंस ए अस्वाभाविक असम्भवित लागे छे अने मानवीनुं मृत्यु मानवीनी बुद्धिने मानवीनी अमरताना विचारमां प्रेरे छे. आथी एक परलोकनी भावना उद्भवे छे. स्नेह-द्वेष-उदारता-कृपणता सर्व तेनी जड ग्राह्यताना अभावे चैतन्य तत्त्व साथे जोडाएलां छे, एवा विचारथी परलोकमां विविधता अने सुर असुर इष्ट अने अनिष्ट तत्त्वो कल्पावा लाग्यां. पितृपूजा-मृत महात्माओनी पूजा ए विदेह हृदय गौरवनी पूजा छे. मानवनी जडाधीन परतन्त्रतामांथी मुक्त बनी स्वतन्त्र थनार चैतन्य, चैतन्यत्वनी सम्पूर्णताए पहोंचे छे. तेनां उच्च उड्डीयानने अटकावनार-तेनी चैतन्य शक्तिने निरुद्ध करनार कोइ जड काराग्रह तेने बाध करतुं नथी. आम तेनी महत्तामां लोकोत्तर सामर्थ्य अने चमत्कारमय शक्ति कल्पाय छे. आम आजे बुद्धिने-जमानाने जे मूर्खता लागे छे ते सर्व धर्म तत्त्वो मानव हृदयनां नैसर्गिक सन्तानो छे. बुद्धिनो-अनुमाननो आधार जड अनुभव उपर छे. ए एवी सांकळ छे के जेनी छेल्ली कडी आपणने जडता साथे दृढ पकडी राखे छे. पतंग दोरथी पृथ्वी साथे जोडाय त्यां सूधीज तेनुं उड्डीयान-तेनो गगन विहार सम्भवे छे. जड पवननी गतिबल अने घनताना प्रमाणमां ओछी जड होवाथीज ते तेने अदृश्य जड आधारे अद्धर रहेली देखाय छे. छतां

जडता ते जडताज छे. तेनो निसर्गतो गुरुत्वाकर्षणथी खेंचाइ पार्थिव पिंडमां मळी जवानोज छे. चैतन्य चैतन्यनो परस्परनो परबारो साधननो अनपेक्ष संयम--अनुभवज धर्मनां तत्त्वने समजावी शके तेम छे. ए मोह के भ्रम नथी परन्तु बुद्धिनो अविषय अनुभव छे. ए अज्ञान नथी परन्तु लोकोत्तर निर्विकल्प ज्ञाननुं स्फुरण छे. ज्यां सुधी म्हारी अल्पता ए परम तत्त्वनो साक्षात्कार करवा के कराववा भाग्यशाली नथी ज्यांसुधी जमानानी बुद्धि जीज्ञासाथी नहि परन्तु अनास्थाथी—विरुद्धमतान्धताथी प्रवर्ते छे त्यां सूधी आथी वधारे कंइ कहेवुं अयोग्य अस्थाने छे. जे भाननी दम्भ अने अभिमान मुक्त मूर्खने पण पात्रता छे. जे आनन्द विद्वान् अने निरक्षर सर्वना अकार्त्रिम हृदयोने मस्त बनावी मूके छे. जे सर्वना स्वाभाविक अनुभवनो विषय अने अभिमानी बुद्धिनो अविषय छे ते शब्दोथी के दलीलोथी समजाववानो व्यर्थ यत्न करवा करतां मात्र अव्यक्त ध्वनिथी सूचववो—तेना अनुभवनां बीजनो उल्लेख करवो एज इष्टतर अने बनी शके तेवुं छे. जड अर्थनी उपासना—जड प्रवृत्तिनी अतिशयता--लाभहीन जणाता, कुदरतना, शान्तिना (आळसना), चित्तनी असम्बद्ध जेवी स्वाभाविक उर्मिओना, कीर्ति अने विद्वत्ताने लाभ नकरे एवा ज्ञानना, कहोके भौतिक प्रवृत्तिमांथी अवकाशना, अनुभवनी खामी ए धर्म तत्त्व अने तेनां सूचक तत्त्वोने मानवीना लक्ष बहार राखे छे. कुदरत, हृदय गौरव, जन्म अने मरण तेमना जीवनविचारमां खरता ताराओ छे. तेमना नित्य प्रकाशने जोवा तेमनी अन्ध आंख समर्थ

नथी. तीव्र बुद्धिनी अकर्त्रिम नास्तिकतामां पण जीज्ञासाथी पात्रता रहेली छे. ए नास्तिकता हृदयमां एवो दाह प्रकटावे छे के जेने अंगे निःशंक ज्ञाननी–शान्तिनी शोधमां ए हृदय तरफडीआं मारतुं गांडां पेठे चारे कोर विह्वलताथी भमे छे अने अन्ते दुःख पावकना विशोधक बळे निर्मळ बनी स्वाभाविकताथी–अदम्भीताथी हृदयमां अचानक अनायासे अमृत रेडातुं अनुभवे छे अने एज एनी दैवी दिक्षा छे. अनुभवहीन क्षुल्लकता पोतानी अति भाग्यशाली स्थिति जलदी मानी शकती नथी. एक भिखारीने कोइ कहे के तुं राज्यने पात्र छो तो ते ते मानी के समजी शके नहि. राज्यपदपर अनायासे एकदम अभिषिक्त थवा छतां पण तेना हृदयमां ए बनाबना तत्त्व माटे अमुक वखत शंका रह्या करे. आ स्वप्न छे के भ्रम तेनो ते वारंवार विचार कर्या करे. परन्तु ते सर्व अवास्थामां पण पोतानी प्रथम अल्पतानी अने नूतन महत्तानी खरी कीम्मतनुं भानज कारण भूत छे. खरा नास्तिकनी नास्तिकता ए आवी अनिष्ठ शंकी अनुभवहीनतानो स्वभाव छे अने तेथीज उग्र नास्तिकता कोइवार सम्पूर्ण श्रद्धामां परिणमे छे. परन्तु ज्यां लोकोत्तरता ए लक्षनीज बहार छे, ज्यां तेना विचारने अवकाशज नथी त्यां तेनी महत्तानुं माप तेनी सम्भवितता के असम्भविततानो विचार तेमां श्रद्धा के अश्रद्धा सर्वने स्थानज क्यां छे? ओरडामांज पूराई रहेनारने माटे आकाश मंडळनुं अस्तित्व के अभाव समानज छे. ज्यारे आ कर्त्रिम दिवालो काळना बळथी जर्जरित थई पडी जशे त्यारेज विश्वविशाळतानो तेनी अगाध महत्तानो सम्भ-

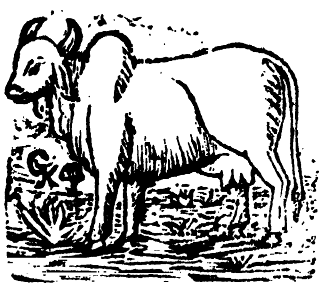
वितताने लेश पण जोवा आपणे समर्थ थईशुं. एकेश्वरमत अने बहु देववादनुं पृथक्करण करनाराओ बुद्धिना चेलाओ छे. धर्मनुं तत्त्व विभूतिनी उपासनामां तेना अनुभवमां छे. पछी ते अनुभव गुरुना गौरवदर्शनथी पिताना वात्सल्यानुभवथी जड विश्वनी भव्यता अने रमणीयताना साक्षात्कारथी के सर्वना संयोजनथी गमे तेथी प्राप्त थाओ. ए विभूति दर्शनथी जे आनन्दधून जागे छे तेनी उत्कृष्टता–पूर्णता–अखंडता–नित्यता–अमिश्रता–विमलता एज परमधर्म अर्थ छे. भ्रमसंशयनो ध्वंस अने परमानन्दनी परम प्राप्ति एज आन्तर अनुभवनी मर्यादा छे. आ सर्व हुं एक विमुख जमानानो कहुं छुं ते हुं समजुं छु. छतां कहुं छुं. म्हारा हृदयमां जे मने जूनां के नवांना पक्षपातथी नहि परन्तु शंकाशील जीज्ञासाथी शोध करतां सत्य लागे छे–हृदय अने बुद्धि दृष्टिनो उपयोग करतां जे झांखुं पण देखाय छे ते कहुं छुं. अने एम कहेवामांज मारो धर्म छे एम मानुं छुं. कीर्ति मेळववाना साधनमां सामान्य मतनी खुशामत बहु समर्थ छे. परन्तु ज्यां हित अने सेवानी वात छे त्यां लोकप्रियता करतां निष्कपट मत वधारे इष्ट छे. लोकमतनी के कीर्तिनी तिरस्कारथी उपेक्षा करवानुं सामर्थ्य मारामां नथी. स्नेह के माननी असरथी मारुं मन स्वतन्त्र रही शके तेवुं नथी. परन्तु सत्यना भोगे दम्भनी उपासना उघाडी आंखे स्पष्ट जोवा छतां करवाथी जेम बने तेम दूर रहेवुं ए हुं दरेक व्यक्तिनी फरज समजुं छुं. तेमने प्रिय होय ते कहेवामां नहि परन्तु तेमनु जे हित होय ते तेमने प्रियकरवानो प्रयत्न करवामां

हुं मने कृतकृत्य मानुं छुं. हुं कहु छुं ते समग्र विश्वने माटे छे छतां हुं हिन्दमां कहुं छुं. हिन्दमां घणां हृदयोने हजु आन्तर दृष्टि छे. अने एज म्हारा लेखना प्रकटी करणने अवकाश आपे छे. म्हारा शब्दो व्यर्थ नथी परन्तु विशाल वर्तमान अने अनन्त भावि कालमां एने माटे अवकाश छे एवी मान्यता मने प्रेरे छे. व्यर्थ नम्र थतां मने नथी आवडतुं, दरेक व्यक्तिने पोताना विचारो अगत्यना लागे छे. पोताने जे सत्य लागे तेने अगत्यनुं-कीमती न मानवुं ए सत्य तरफ प्रेमनो अभाव सूचवे छे. छतां मानवनी स्खलन पात्र बुद्धिए अभिमान करवानुं नथी अने तेथी जो आ विचारो सत्य होय तो मान्य थवा अने जो असत्य लागे-समाजमां कोईने तेनो उत्तर देवा जेटली पात्रता तेमां जणाय तो विवेचनथी जाते भूल सुधारी सत्य समजवा यत्न करवो ए कंइ खोटुं लागतुं नथी. मूर्ख रही शुकपांडित्यथी पंडित गणावा करतां मूर्ख गणाई खरी विद्वत्ता मेळववा यत्न करवो इष्टतर छे. पाश्चिमात्य विचारोनी खामी बतावया अने ते दूर करवा माटे हिन्दी विचारोनी उपासनानी आवश्यकता जणाववा आटलुं कह्युं. में कह्युं ते अक्षरशः सत्य भलें घणाने न लागे. केळवणीनी पद्धतिमां मने एटलुंज इष्ट छे के बाळक चित्तोने बन्ने पक्षनुं ज्ञान आपी पोतानो स्वतन्त्र विचार बांधवानो अवकाश आपवो. हिन्द के पश्चिम बेमांथी अमुक एकज सत्य छे एम कहेवानी इंक आवश्यकता नथी. स्वतन्त्र विचार भलें गमे ते एक निश्चय उपर

आवे. जाणी जोइ झेर स्वीकारनार भलें स्वीकारो. जेनो उपाय नथी तेनी उपेक्षा कर्याविना छूटको नथीः परन्तु कोइनी अज्ञानतानो लाभ लइ तेनी विमलतामां विष संचार करवो ए घातकी काम छे. विस्तृत चर्चा भावीने अधीन राखी सूचक शब्दो कही अहीं हुं विरमुं छुं. आर्य हृदयोने प्रवृत्त थवा एटलुंज कहेवुं बस छे के "**धर्मान्नप्रमदितव्यम्**"

शिवमस्तु

शान्तिः शान्तिः शान्तिः



तात्पर्य

१. सर्व ज्ञान मातृभाषामां आपवुं अने ते माटे गुजराति आदि दरेक भाषादीठ केळवणीनी संस्था स्थापवी.

२. पश्चिमनुं अनुकरण नहि परन्तु स्वतन्त्र विकास मार्गनुं अवलम्बन करवुं.

३. पश्चिमनी हृदय तत्त्वनी खामी हिन्दमां रहेवा न देवी.

४. दरेक हिन्दी भाषापर संस्कृतना संस्कारो पाडी विविधताना परस्पर सम्मेलनथी—विकासथी भाषा ऐक्य साधवा यत्न करवो.

५. हिन्दपरनी सर्व केळवणी संस्थाओने एक महा संस्थाना अंग रूपे संबद्ध राखवी.

६. परभाषानु ज्ञान मातृभाषामां उतारवा प्रबल यत्न करवो.

७. कोलेजमां आवश्यक हाजरी कहाडी नाखवी.

८. शारीरिक सुधारणामाटे अने ऐक्यनी भावना पोषवामाटे सर्व केळवणी संस्थाओनुं एक सामान्य उत्सवस्थान अने समय राखवां.

९. अभ्यास माटे पुस्तको संस्था ए पोते निर्दोष रूपमां छपाववां अने पडतर कीमते के पुस्तकालयो द्वारा ते पुस्तक सर्व वाचक अने अभ्यासक वर्गने सुलभ करी देवां.

आवुं कंइक मारा कहेवानुं तात्पर्य छे. सम्मत थनार अथवा कोइपण रीते सहाय आपवा इच्छनार पत्रव्यवहार करवा कृपा करशे एवी आशा अस्थाने नहि गणाय.

कोटडा—सांगाणी
काठीयावाड
विक्रमार्क १९६९
दीपोत्सवी.

वजेशंकर कानजी.

कार्यपद्धति.

गुर्जर सर्व विद्वानो अने देशभक्तोए पत्रव्यवहारथी नक्की करेला स्थळे अने समये एकत्र थवुं.

गुजराति केळवणीनी धारा सभा स्थापवी.

गुजराति केळवणी संस्थाना ठरावोने कार्यमां मूकवा तथा तेनुं चालु काम करवा एक कार्य सभा स्थापवी.

गुर्जर केळवणीनो अभ्यासक्रम केटला वर्षनो करवो तथा दरेक वर्षमां शुं शुं विषयनुं केटलुं केटलुं ज्ञान आपवुं ते नक्की करवुं.

शीखववाना विषयो संबंधे केटलां पुस्तको गुजरातिमां छे अने तेमानां कयां कयां पुस्तको कया कया वर्षना अभ्यास माटे लायक छे ते नक्की करवा एक मोटी कमीटी नीमवी, जेमां जूदा जूदा विषयमां प्रवीण विद्वानोने स्थान आपवुं अने दरेक विद्वान्ने पोताना खास विषयना संबंधनां पुस्तको तपासवानुं सोंपवुं. ते कमीटीए मात्र गुजरातिमां जे पुस्तको छे तेनुंज निरीक्षण करी, तेमानां योग्य पुस्तकोने योग्य वर्षना अभ्यास क्रममां नाखवानुं सूचवी बेसी रहेवानुं नथी परन्तु कया कया विषयमां गुजराति पुस्तकोनी खामी छे अने परभाषानां कयां पुस्तकोनां भाषान्तरथी ए खामी दूर थइ शके ए पण तपास करीने कहेवानुं छे. आ कमीटी अमुक चोकस मुदतमां पोतानो मत जाहेर करे पछी जे

पुस्तकोनां भाषान्तरो करावबानां होय ते पोतानी राजी खुशी अने उत्साहथी भाषान्तर करवा इच्छनारने सुप्रत करवां. गुजरातमां देशभक्त विद्वान् बुद्धिशाली वर्गनी खामी नथी.

अभ्यासना पुस्तको बने तो गु. व. सोसायटी अथवा फार्बस गुजराति सभा के एवी कोइ बीजी निःस्वार्थ संस्थाद्वारा प्रगट करावबां.

आवश्यक खर्चमाटे एक फंड उघाडवुं.

जेम जेम फंड वधतु जाय तेम तेम अभ्यासमाटे शाळाओ उघाडता जवुं तथा हुन्नर कळा आदिनुं अनुभवज्ञान आपवाना साधनो पुरां पाडवां.

मातृभाषा--गुर्जरभारतीना यशोगान--उत्सवमाटे एकरमणीय स्थळ नक्की करवुं अने त्यां अमुक चोकस समयने अंतराये गुर्जर युवकवर्गनुं एक महान् सम्मेलन करवुं जेमां शारीरिक तथा मानसिक विविध स्पर्धामां विजयवंत थनाराओने मानद इनामो आपवां.

हिन्दना अन्यप्रान्तोना विद्वानोने गुर्जर केळवणीसंस्थाना उद्देश अने धाराओ तथा कार्यपद्धतिथी जाणीता करवा अने तेमने पण एज प्रकारे मातृभाषामां ज्ञान आपवा माटे संस्था स्थापवा तथा एवीरीते हिंदना प्रान्तोमां स्थपाती सर्व संस्थाओने समग्र हिन्दनी एक महासंस्थाना अंगरुप बनाववा माटे प्रवृत्त थवानी विनति करवी.

मने आशा छे के गम्भीर विद्वान् वर्ग तेमज उत्साही देशभक्त युवान वर्ग आमां सम्मत थशे कार्यमां प्रवृत्त थइ पोतानी मातृभाषानी सेवा बजावशे अने पोतानां बालकोनां जीवनने सुखमय बनाववामां तेमज अज्ञान अने दुःखी देशबंधुओमां ज्ञान उत्साह अने उद्योग प्रसराववामां स्नेह अने उत्साहथी प्रवृत्त थशे.

अस्तु.



श्री 'सरस्वती' प्रेस, नं० ३३२–३३४ नागदेवी स्ट्रीट

मुंबईमां शा. मगनलाल जगजीवनदासे

छाप्युं छे.